# Vaidik Garjana

वर्ष १७ अंक ९ १० सितम्बर २०१७

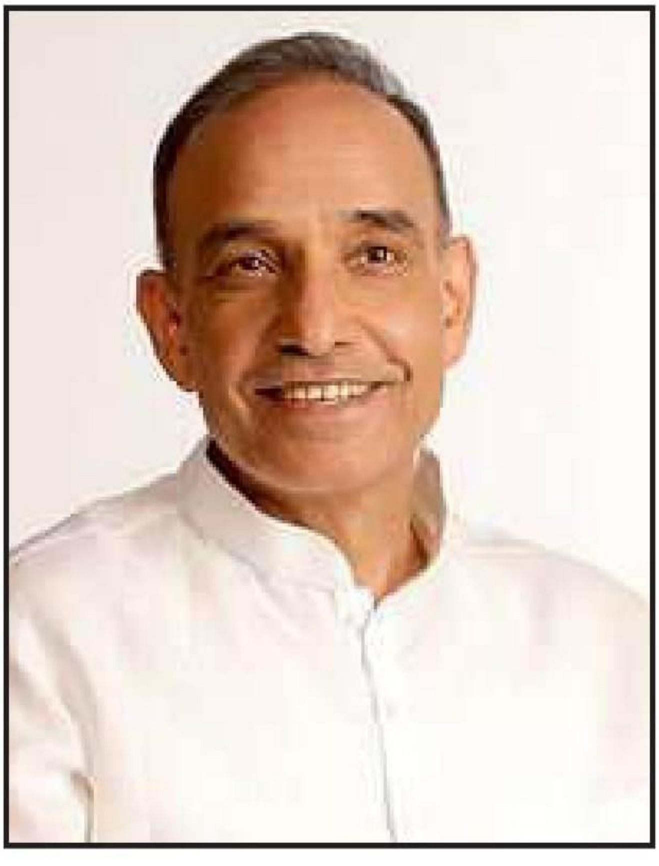

ऋषि दयानन्द के परम अनुयायी व पूर्व पुलिस कमिशनर

**डॉ.सत्यपाल सिंहजी**

केन्द्रीय मानवसंसाधन राज्यमन्त्री बनने पर हार्दिक अभिनन्दन×

राज्य श्रावणी वेदप्रचार में एक आर्य समाज के वेदपारायण यज्ञ में ब्रह्मापदपर विराजमान वैदिक विद्वान पं.महेन्द्रपालजी आर्य एवं यजमान।

नासिक की पंचवटी आर्यसमाज में आयोजित श्रावणी समारोह में डॉ.कमलनारायणजी आर्य एवं मंच पर भजन प्रस्तुत कर रहे पं.रामकुमारजी आर्य।

लातूर की रामनगर आर्यसमाज में श्रावणी कार्यक्रम में मार्गदर्शन करते हुए आचार्य श्री शिवकुमारजी। साथ में हैं पं.ब्रिजेशजी शास्त्री, पं.ज्ञानकुमारजी आर्य एवं स्वामी अमलानन्दजी।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

# वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११८ | कलि संवत् ५११८ | विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १९४ | अश्विन | १० सितम्बर २०१७



प्रधान सम्पादक
**माधव के.देशपांडे**
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
**डॉ.ब्रह्ममुनि**
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक: प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)


## अनुक्रम

### हिन्दी विभाग


१) मानवता के नाम पर (सम्पादकीय) ...................... ५
२) श्रावणी वेदप्रचार- धन्यवाद विज्ञप्ति ..................... ७
३) प्रान्तीय सभा का जाहिर स्पष्टीकरण ..................... ८
४) ईट के चार आर्य बलिदानी ................................ ९
५) दक्षिण में आर्यों की बलिदान परम्परा .................. १४
६) समाचार दर्पण ............................................. १८


### मराठी विभाग


१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी ............................ १९
२) मुक्ती संग्रामात ÷गूंज उठी' गुंजोटी ...................... २०
३) संस्कृतला मिळावा राष्ट्रभाषेचा दर्जा .................... २४
४) संस्कृत ब्राह्मणांची नव्हे, ज्ञानाची भाषा ................ २७
५) श्रावणी कार्यक्रम वृत्तांत .................................. २८
६) शोकवार्ता .................................................... ३०
७) वार्ताविशेष .................................................. ३३



**✻ प्रकाशक ✻**
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

**✻ मुद्रक ✻**
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

**वैदिक गर्जना के शुल्क**
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-



इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा ।

श्रुतिसुगंध

## विद्वान, शिक्षक व उपदेशक

**ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृताऽअन्तरिक्षे।**
**तेभिर्नोऽअद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नोऽअधि च ब्रूहि देव।।**

(यजु.३४/२७)

**पदार्थान्वय–** हे **(सवितः)** सूर्य के तुल्य ऐश्वर्य देनेवाले **(देव)** विद्या और सुख के दाता आप्त विद्वान् पुरुष× जिस **(ते)** आपके जैसे सूर्य के**(अन्तरिक्षे)** आकाश में गमन के शुद्ध मार्ग हैं, वैसे **(ये)** जो**(पूर्व्यासः)** पूर्वज आप्तजनों ने सेवन किये**(अरेणवः)** धूलि आदि रहित **(सुकृताः)** सुन्दर सिद्ध किये**(पन्थाः)** मार्ग हैं **(तेभिः)** उन **(सुगेभिः)** सुखपूर्वक, जिनमें चलें ऐसे **(पथिभिः)** मार्गों से**(पद्य)** आज**(नः)** हम लोगों को चलाइये, इन मार्गों से चलते हुए हमारी **(रक्ष)**रक्षा **(च)**भी कीजिये**(च)** तथा**(नः)** हमको **(अधि, ब्रूहि)** अधिकतर उपदेश कीजिये, इसी प्रकार सबको चेतन कीजिए।

**भावार्थ –** इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो× तुमको चाहिये कि जैसे सूर्य के आकाश में निर्मल मार्ग हैं, वैसे ही उपदेश और अध्यापन से विद्या, धर्म और सुशीलता के दाता मार्गों का प्रचार करें।

**हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम की ७९ वी वर्षगांठ पर**
**असंख्य ज्ञात-अज्ञात हुतात्माओं,**
**आर्य क्रान्तीवीरों, स्वतन्त्रता सैनानियों को**
**भावपूर्ण श्रद्धांजलि व शतशः अभिवादन×**

तुम न समझो देश को स्वाधीनता यूं ही मिली है,
हर कली, इस बाग की खून पीकर खिली है ।
मस्त सौरभ रूप था, रंग रूप बहारों को मिला है,
ये शहीदों के उबलते खून का ही सिलसिला है ।।

संपादकीयम्

# मानवता के नाम पर...

आजकल विभिन्न मत-सम्प्रदाय अपनी विचारधारा की श्रेष्ठता को प्रस्तुत करने में जुटे हैं । इनके धर्मगुरु व नेता ÷हमारा ही सम्प्रदाय संसार में सुख व शान्ति स्थापित करने में सक्षम है', यह बताते है और मानवतावादी दृष्टिकोन की भी वकालत करना नहीं भूलते। इस तरह आज मानवता का उद्घोष करना लगभग फैशन सा हो गया है। अपने तत्त्वज्ञान को सर्वोपरी बताने की वे कोशीश तो करते हैं, लेकिन सृष्टिविज्ञान तथा तर्क व तंत्र विज्ञान के आधार पर इसकी सिद्धता करने से पीछे हटते हैं । एक ओर ये धर्मगुरु अपने मतों की व्यापकता को प्रदर्शित करने में तत्पर हैं, तो दूसरी ओर इन मजहबों वा जातिसमूहों की विवेकहीन व तर्कविसंगत प्रतिमा भी सामने आती है। हिन्दुओं के धर्मगुरु जब अपने को सनातनी बताते हैं, तब पौराणिक पाखण्ड, अन्धविश्वास व कथित बाबा लोगों के काले धन्दे दुनिया के सामने आते हैं । इस्लाम के मौलवी जब अपनी वरीयता प्रचारित करते हैं, तब उनका आतंकवादी चेहरा सामने आता है । ईसाई भी स्वयं को श्रेष्ठ मानते हैं, तब उनका भी वर्णद्वेषी दुर्भाव नजर आता है। बौद्ध, जैन, पारसी आदि मतों में भी अब सिद्धांतविहीनता स्पष्ट दिखायी दे रही है। अपना श्रेष्ठत्व सिद्ध करने के लिए ये सभी मतवादी सेवादि साधनों का भी प्रयोग करते हैं। लेकिन इनमें से कोई भी अनुयायी अपनी विचारधारा की निष्पक्ष भाव से समीक्षा करने के लिए तैयार नहीं है। क्योंकि उन्हें यह भय है कि तर्क की कसौटी पर हम खरे नहीं उतरेंगे, तो लोगों का हमसे विश्वास उठ जायेगा। अपने मत-पन्थ बनें रहें, इसलिए वे नानाविध तर्क भी प्रस्तुत करते हैं।

विडम्बना इस बात की है कि आज हिन्दू मत के कई वर्ग अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील हैं । महाराष्ट्र के कुछ लोग पहले ही ÷शिवधर्म' के नाम से अलग हो चुके हैं, जिन पर म.फूले, अम्बेडकर के विचारों का गहरा प्रभाव है, तथा स्वयं को वे प्रगतिशील विचारधारा के अनुयायी समझते हैं। और अब महाराष्ट्र व कर्नाटक में रहनेवाले शैव विचारों के लिंगायत लोग भी हिंदुओं से अलग होकर अपना अल्पसंख्य समूह बनाने के पक्ष में हो रहे हैं। गत माह इन हजारों लिंगायत लोगों की लातूर में एक महारैली निकली थी। हालांकि इसका मुख्य उद्देश्य इनके समूह को आरक्षण की मांग को लेकर था। लेकिन रैली का नेतृत्त्व करनेवाले नेताओं ने स्पष्ट शब्दों ने बताया कि ÷लिंगायत धर्म' के नाम से हमें राष्ट्रीय स्तर पर हमें अलग पहचान चाहिए। क्योंकि मानवता का तत्त्वज्ञान हमारे ही मत में है । अतः स्पष्ट है कि यह समुदाय भी अब ÷हिन्दू मत' से अलग होना चाहता है। आश्चर्य बात यह है

कि, इनके एक साधु नेता का आरम्भिक जीवन रा.स्व.संघ की संस्कारछाया में ही बीता है। फिर भी आज ये हिन्दू समाज से अलग हो रहे हैं। अब इसकी चिंता सही अर्थों में हिंदुत्ववादी संगठन संघ को होनी चाहिए, क्योंकि इसके सरसंघचालक श्री मोहन भागवत सहित अन्य नेता भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने की सदैव घोषणा करते हैं।

रहा मानववाद का मुद्दा× मानवता के सिद्धान्त तो सभी के लिए एक ही होते हैं। यदि ये सिद्धान्त इन सभी पन्थवादियों के पास हैं, तो सब एक ही हो गये× फिर अलग डफली-अलग राग क्यों? मानववाद के प्रबल सम्पोषक महर्षि दयानन्द सारे संसार को मानवता की राह पर लाना चाहते थे। वैदिक तत्त्वज्ञान के आधार पर ईश्वरप्रणित मानवीय मूल्यों के साथ वे सबको एक ही विचारधारा के साथ जोडना चाहते थे। सभी मत-मतान्तरों में विद्यमान गलत बातें दूर होकर संसार को सुख की राह मिलें, ऐसी उनकी तीव्र अभिलाषा थी। स्वामीजी का मानववाद सृष्टिविज्ञान, विवेक व तर्क के बल पर खडा है। उनका मौलिक चिन्तन वेद व व्याकरण सम्मत है। आंखें मूंदकर, कानों को बन्द कर अथवा अपनी प्रज्ञा को ताले लगाकर किन्ही सिद्धान्तों का स्वीकार करने के वे पक्ष में कदापि नहीं थे । इसीलिए ÷सत्यार्थ प्रकाश', ÷ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका', ÷संस्कारविधि' आदि ग्रंथों में उनका मानवीय चिन्तन बार-बार उजागर होता है । साथ ही उन्होंने शास्त्रार्थों और व्याख्यानों द्वारा मानवमात्र को अज्ञान व विलासिता की घोर निद्रा से जगाकर सामाजिक, राष्ट्रीय और मानवतावादी आदर्शों का उद्घोष किया था। संसार का हर एक मानव सुखी व समृद्ध हो तथा शान्तिपूर्वक जिये, यही उनकी आकांक्षा थी।

स्वामीजी किसी भी स्थिति में मत-मतांतरों का पक्ष नहीं लिया। ÷सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका में वे स्पष्ट कहते हैं- ÷यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों का झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ। वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतवालों के साथ भी वर्त्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी×' स्वामीजी का मानववाद इतना स्वच्छ और विशाल है कि, वे अपने ग्रंथों में कहीं पर भी संकीर्ण साम्प्रदायिक सम्बोधन नहीं करते। हर जगह उनका सम्बोधन -÷ आर्यों× मनुष्यों× विद्वानों...× देखो×... यही रहा है, न कि हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों, ईसाइयों, बौद्धों आदि...×'इससे पदे-पदे महर्षि की व्यापक मानवीय अवधारणा सिद्ध होती है । आज के बढते साम्प्रदायिक व जातीय विषैले माहौल में म.दयानन्द द्वारा वेदप्रतिपादित मानववाद की प्रासंगिकता अत्यधिक नजर आती है।

**- नयनकुमार आचार्य**

# मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान

## (श्रावणी वेदप्रचार पर्व २०१७)

## सभाद्वारा विद्वानों व आर्यसमाजों के धन्यवाद

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में राज्य की लगभग १३५ आर्यसमाजों के लिए श्रावणी वेदप्रचार का आयोजन हुआ । मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान के अन्तर्गत दि.२४ जुलाई से २१ अगस्त २०१७ के दौरान विभिन्न आर्य समाजों में ये श्रावणी पर्व मनाये गये।

इस वेदप्रचार अभियान में उत्तर भारत से लगभग १६ वैदिक विद्वानों तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया था। साथ ही अपने ही महाराष्ट्र प्रांत के लगभग ५० विद्वानों व भजनोपदेशकों को भी वेदप्रचार हेतु आमन्त्रित किया था। इन सभी विद्वान व भजनोपदेशकों ने बडी श्रद्धा के साथ जगह-जगह की आर्यसमाजों में प्रचार किया। वेदप्रचार के कार्यक्रम कही पर सात, पाँच या तीन दिनों तक चलते रहे। विशेषत: अनेकों आर्यसमाजों में वहाँ के पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं ने उत्साह के साथ श्रावणी पर्व के आयोजन में बडी लगन के साथ कार्य किया। सभाद्वारा निश्चित की गयी तिथियों तथा भेजे गए विद्वानों द्वारा ही उन्होंने कार्यक्रम रखें। सभी विद्वानों व भजनोपदेशकों की निवास व भोजन की व्यवस्था बढिया ढंग से की । आर्यसमाज के साथ  ही सार्वजनिक स्थानों पर भी कार्यक्रम रखे गये। अगले आर्यसमाजों तक विद्वानों को पहुंचाने की जिम्मेदारी भी उत्तम प्रकार से सँभाली। इसलिए सभा आपका अभिनन्दन करते हुए आपको शुभाशीष देती है×

आमन्त्रित सभी विद्वान व भजनोपदेशकों ने भी शहर व देहातों में यथाशक्ति वेदप्रचार कार्य में अपना पूरा योगदान देकर वेदप्रचार के इस अभियान को सफल बनाया। वेद प्रचार के इस पवित्र कार्य में आप सभी को काफी कष्ट उठाने पडे। इन सभी को आवागमन (यात्रा) में काफी असुविधाएँ हुई होगी। सभी ने बडी उदारता का परिचय देते हुए प्राप्त परिस्थितियों में इस वर्ष के श्रावणी वेदप्रचार उत्सव अभियान में अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। अत: महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा बडे ही कृतज्ञभाव से आप सभी के हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट करती हैं।

-० आपके ही कृतज्ञ-आभारोत्सुक ०-

| डॉ.ब्रह्ममुनि | माधव देशपाण्डे | उग्रसेन राठौर | लक्ष्मण आर्य गुरुजी |
|---|---|---|---|
| (प्रधान) | (मन्त्री) | (कोषाध्यक्ष) | (वेदप्रचार अधिष्ठाता) |

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परळी-वैजनाथ

# पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी(हरिश्चंद्र गुरुजी) पर किये गये दोषारोप

## - प्रान्तीय सभा का जाहिर स्पष्टिकरण -

आजकल मोबाईल, फेसबुक, इन्टरनेट आदि साधनों का बडे पैमाने पर दुरूपयोग हो रहा है। सोशल मिडिया के माध्यम से लोगों पर बेतुके दोषारोप हो रहे हैं। हाल ही में आर्यजगत् के तपस्वी सन्यासी व असंख्य छात्रों के निर्माता शतायु प्राप्त वयोवृद्ध समाजसेवी व्यक्तित्त्व पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्रजी गुरुजी) पर भी किसी नाजायज महिला ने फेसबुक पर दोषारोप कर अपनी नीचवृत्ति का प्रदर्शन किया है।

स्वामीजी के पवित्र व निष्कलंक जीवन से सारा आर्य जगत् सुपरिचित है। देश-विदेश की जनता उनके छात्रनिर्माण के कार्य से प्रभावित है । राष्ट्र की युवाशक्ति-विद्यार्थियों को व्यसनमुक्त, वेदानुगामी, सदाचारी व मानववादी बनाने हेतु स्वामीजी ने अपना समग्र जीवन समर्पित किया। अपने सान्निध्य में आनेवाली कन्याओं व महिलाओं को पुत्रीवत् मानकर उन्हें गृहस्थाश्रम व परिवार कल्याण की दृष्टि से उपदेश देते रहे।

इतिहास साक्षी है उनके सौ वर्ष की चन्द्रमा की भांति धवल जीवनयात्रा में कहीं पर भी चरित्रहीनता का संशय तक नहीं है। अपने शिष्यों, परिचितों, सम्बन्धियों के घरों में सदैव आते-जाते रहे, किन्तु मनसा-वाचा-कर्मणा पवित्रता के साथ बेदाग जिये। लेकिन आज जब कोई चारित्रिक आरोप लगाता हो, तो उससे बढकर संसार में महामूर्ख नहीं होगा? अत: हम सबका कर्तव्य है कि इसकी ओर अनदेखा कर मात्र उपेक्षा करे...× **÷हाथी चलता है... कुत्ते भौंकतें है...'** इस कहावत के अनुसार आर्यों व शिष्यजनों को उचित है वे ऐसे प्रसंगों को दुर्लक्षित करे× कुछ उत्साही लोग इसपर कार्रवाई करने की मांग कर रहे हैं, किन्तु यह उचित नहीं है× सभा ने इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध विधिज्ञों, वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों से विचारविमर्श किया, तब कार्रवाई न करने के ही संकेत मिलें है× क्योंकि कथित महिला ने स्वामीजी पर व्यक्तिगत आरोप किये हैं, तब कार्रवाई भी स्वामीजी को ही करनी पडेगी× और इस वृद्धावस्था में पू.स्वामीजी को पुलिस कार्यालय, कोर्ट कचहरी आदि में ले जाना संयुक्तिक नहीं होगा। इससे स्वामीजी की प्रतिष्ठा भी कम होगी।

अत: सभी के समुचित परामर्शानुसार पुलिस कार्रवाई के चक्कर में न पडने का निर्णय सभा ने लिया है। इस घटना से आहत पू.गुरुजी के शिष्यगणों तथा परिवार व सम्बन्धीजनों को जो मानसिक क्लेश हुआ है, इसपर सभा दु:ख व संवेदनाएँ प्रकट करती है तथा इस घटना का तीव्र शब्दों में निषेध करती है।

**भवदीय:** **डॉ.ब्रह्ममुनि(प्रधान),माधव देशपाण्डे(मंत्री),उग्रसेन राठौर (कोषाध्यक्ष)**

**व सभी पदाधिकारी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

## हैदराबाद संग्राम की अमर कहानी

# ईट के चार आर्य बलिदानी...

**- स्वा.सै.(स्व.)दत्तात्रय पाटिल(दत्तू मास्तर)**

वीरभूमि भारतवर्ष में जब कभी अन्याय एवं अत्याचार बढा, तब अनेकों भूमिपुत्रों ने इस आँधी को जान हथेली पर लेकर रोका और क्रान्ति का सिंहनाद किया। दक्षिण भारत में हैदराबाद के शासक निजाम ने अपने मुट्ठीभर लोगोंद्वारा यहाँ की बहुजन आर्य (हिन्दू) जाति पर क्रूरतम अत्याचार किये । लोगों का जीवन उध्वस्त कर अपना वर्चस्व बढाना चाहा, तब इस भूमि में जन्में अगणित वीरों ने अपनी शूरता के जौहर दिखाये। जगह-जगह निजाम के विरुद्ध आंदोलन चले। युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के अनेकों अनुयायियों ने आर्य समाज की ÷ओ३म्' पताका कन्धोंपर लेकर निजाम और रजाकारों द्वारा होनेवाले अत्याचारों को चुनौति दी। असंख्य आर्य नेतागण जेल गये। अनेकों ने अपने घरपरिवारों को त्याग कर राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व अर्पित किया। इन्हीं शहीदों की वीरमाला को महाराष्ट्र के ईट (ता.भूम जि.उस्मानाबाद) के चार आर्य बलिदानियों ने अपने पावन बलिदान से अलंकृत किया, वे हैं हुतात्मा श्री किशनरावजी टेके, हुतात्मा श्रीमती गोदावरीदेवी टेके, हु.श्री विश्वनाथ तेली तथा हु.श्री मारुती माली× इन चारों वीर शहीदों को शौर्यगाथा इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ यावत् सूर्यचन्द्र गाते रहेंगें ।

**तत्कालीन भयंकर स्थिति –**

स्वतन्त्रता के पूर्व धाराशीव(उस्मानाबाद) जिलान्तर्गत कलम्ब एवं भूम का परिसर सामाजिक तथा धार्मिक परतन्त्रता के साथ ही आर्थिक विवंचनाओं से भी पीडित था। लोगों में शिक्षा का अभाव था, क्योंकि उस समय समाज में पढाई पर उतना विशेष महत्व दिया नहीं जाता था। इस कारण सर्वत्र अज्ञान एवं अन्धकार फैला हुआ था। फलस्वरूप आर्य (हिन्दू) प्रजा में संगठन की भावना नहीं थी । सभी का लगभग कृषि ही एकमात्र व्यवसाय था। बहुसंख्य किसानों को वर्षा पर निर्भर रहना पडता था। जब पानी बरसे तभी खेती में उत्पन्न होता था । इस कारण आर्य हिन्दू समाज सुख, सुविधाओं से वंचित था । ऐसी बिकट आर्थिक व्यवस्था में निजाम एवं उसके अनुयायी रजाकारों ने आर्य हिन्दू जनता को लुटना शुरु किया । सत्ता एवं अधिकार के बलपर उन्होंने समाज को त्रस्त करना आरम्भ किया।

**आर्य दम्पती टेके का कार्य –**

तत्कालीन विकट परिस्थिति में ईट निवासी आर्य दम्पत्ती श्री किशनराव एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गोदावरीदेवी टेके ने अपने आदर्श जीवन तथा क्रान्तिकारी कार्यों से समाज में नयी चेतना का संचार किया। प्रचंड धैर्यशक्ति एवं अनोखे साहस से जनता का नेतृत्व कर निजाम के विरुद्ध लडने के लिए उन्हें प्रेरित किया। श्री किशनरावजी स्वामी दयानंद के सच्चे अनुयायी थे। ग्राम ईट में आर्य समाज की स्थापना कर अनेकों वैदिक विद्वानों द्वारा जनता में आर्य विचारों का प्रचार करवाया। साप्ताहिक सत्संगों व विविध पर्वों में ग्रामवासी बडे उत्साह से सम्मिलित होते थे। इससे अनेकों के जीवन में परिवर्तन आया। इतना ही नहीं, बल्कि इस टेके दम्पती ने दलित भाइयों को पूर्ण सहयोग दिया। दु:खी पीडित जनों के आँसू पोंछें। ऐसे करूणायुक्त ह्रदयवत्सल आर्य दम्पती का महान् जीवन युग-युग तक आनेवाली पीढी को प्रेरणा देता रहेगा।

**हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन के नेता–**

श्री किशनराव एवं श्रीमती गोदावरीदेवी टेके ने १९३८ में ईट परिसर के आन्दोलन का नेतृत्व किया। टेके दम्पती ने रजाकारों द्वारा होनेवाले अत्याचारों का डटकर मुकाबला किया। उस समय के आर्य नेता पं.गणपतरावजी कथले भी अग्रणी आर्य नेता थे। उन्होंने कलम्ब व भूम परिसर में आर्य समाज के विचारों को अहोरात्र परिश्रम से बढाया। कथलेजी के सहयोगी बनकर श्री किशनराव ने भी आर्य समाज की वैदिक विचाराधारा को गाँव गाँव में पहुँचाया। उन्होंने अन्याय एवं अत्याचारों की जंजीरों से जकडी जर्जर हिंदू जाति में प्राण फूँके और जन-सामान्यों में स्वाभिमान की ज्योति जगायी। ईट, वाशी, गिरवली आदि देहाती स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना कर जनता में शस्त्र और शास्त्र का प्रचार-प्रसार किया। साथ ही इन गावों में रहनेवाली जनता को निर्भय बनाया।

**क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्थान –**

किशनराव टेकेजी ने पं.गणपतरावजी कथले के कन्धों से कन्धा लगाकर बडे जोश के साथ काम किया। टेकेजी के अथक परिश्रम एवं सहयोग के कारण ही गणपतरावजी अपने पैत्रिक ग्राम कलंब को हैदराबाद संग्राम की ÷बारदोली' बना सके। जब १९३८ इसवी में हैद्राबाद सत्याग्रह शुरु हुआ तब श्री किशनरावजी टेके ने अपने सुपुत्र चि.रघुनाथ टेके को बाबासाहेब पाटील(चांदवड), रामलिंग वाणी, विठ्ठलराव कांबले तथा अन्य पाँच युवकों के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलनार्थ सोलापुर भेजा। ईट इलाके के दस आर्य सेनानियों को महात्मा आनन्द

स्वामी(खुशहालचन्द खुर्सन्द) के जथ्थे में भेजा और उन सभी ने गुलबर्गा जेल में ही शिक्षा भोगी।

## हिंसा का बदला हिंसा से –

इसके पश्चात् १९४१ में आर्य समाज के आन्दोलन ने तीव्र रूप धारण किया। सभी जनता को श्री टेकेजी ने ओ३म् के झण्डे तले संघटित किया। सर्वत्र आर्यमय वातावरण बन गया। अंग्रेजों से भी अधिक जुल्म निजाम तथा रजाकारों के थें। जबरन जनसामान्यों के अधिकार छिने गये। तब श्री किशनराव टेके और उनके सहयोगियों ने कडा संघर्ष किया। अत: उन्हीं के नेतृत्व में सभी जन उत्साह से कार्यरत थे। चांदवड के बाबासाहेब पाटिल, कृष्णा हरी पाटिल एवं उनके सभी सहयोगी जब जेल की सजा भोगकर लौंटे तब उन्होंने श्री टेके के साथ जनजागृति आन्दोलन प्रारम्भ किया। इसी दौरान कृष्णा हरि पाटील की सम्पत्ति जप्त की गयी। श्री बाबुराव पाटिल(अंजनसोडा), श्री विठ्ठलराव मोटे(गिरवली), श्री जनार्दनराव निमकर(अंदरुड) तथा अन्य लोग जब किशनरावजी टेके के साथ रहकर क्रान्तिकारी काम करने लगे, तब रझाकार, निजामी पुलिस, तथा उस्मानाबाद के तत्कालिन जिलाधीश व पुलिस अधिकारी(डी.एस.पी.) इन सभी को यह बात रास नहीं आयी। उनके मन में द्वेष की भावना जाग उठी। इसी के परिणामस्वरुप उन निजामी दुष्टों ने श्री किशनरावजी टेके पर दिन दहाडे सशस्त्र आक्रमण किये। उस समय श्री टेकेजी के पास केवल एक लाठी थी। उसीसे उन्होंने प्रतिकार किया। **÷अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम् ×**' के अनुसार सौभाग्यवश किशनराव बालबाल बच गये। सारा शरीर खून से लथपथ था। फिर भी वे घबराये नहीं। इस समय डी.एस.पी. मोमीन ईट में ही था। तब निर्भिकता की इस प्रतिमूर्ति ने तत्क्षण प्रत्युत्तर के रुप में गर्जना की– ÷आप जैसी क्रूर पुलिस ही ऐसे बदमाश गुंडों को समर्थन दे रही है और उन्हें मेरी हत्या हेतु प्रेरित कर रही है, तब हम पुलिस केस नहीं करेंगें। हम तो (जैसे को तैसा) हिंसा का बदला हिंसा से ही लेंगे ।'

## खर्डा कैम्प का नेतृत्व –

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् १९४७ में निजाम ने अपने हैदराबाद प्रान्त को भारतवर्ष में विलय नहीं किया। अत: स्टैट काग्रेस और आर्य समाज को अपना आन्दोलन अधिक तीव्र करना पडा। उस समय सभी आर्य युवक घाटपिंपरी के पहाडों मे एकत्रित हुए और संघटनशक्ति द्वारा सशस्त्र प्रतिशोध लेने का निश्चय किया। खर्डा(जि.नगर) में स्थापित युवा कैम्प का नेतृत्व किशनरावजी टेके ने किया था। अपने छोटे भाई चिन्तामणि को जेल भेज

दिया। ज्येष्ठ पुत्र रघुनाथ को खर्डा कैम्प में सशस्त्र प्रतिकार हेतु भूमिगत रखा। उस समय लगभग सौ-डेढ सौ युवक कैम्प में रहते थे। निजामी नाके जलाना, पाटिल-कुलकर्णी लोगों के दफ्तरों को आग लगाना आदि अनिष्ट कार्य कर निजाम को आहत पहुँचाना, यह इनका उद्देश्य था। किशनराव टेके उस समय अपने ग्राम इट में ही थे । खर्डा गांव आने के लिए उन्हें अनेकों ने आग्रह किया, तब उस निर्भयता के धनी ने स्वाभिमान के साथ कहा - ÷सियारों की भाँति छुपकर क्यों बैठे हो? आगे आओ× मृत्यु तो एक दिन आनी होनी ही है, उसे कोई भी टाल नहीं सकता×' इस प्रसंग से श्री किशनरावजी टेके की धैर्यवृत्ति के दर्शन होते थे ।

## पैनी दृष्टिवाले कार्यकर्ता -

श्री किशनराव टेके दूरदृष्टिवाले कार्यकर्ता थे । उनकी सूक्ष्म विचारप्रणाली का पता अनेकविध घटनाओं से चलता है। घाटपिंपरी आर्य समाज का सदस्य मैं (लेखक) भी उनका परममित्र था। वे और हम मिलकर उस समय नवयुवकों व नागरिकों में जागृति लाने तथा आर्य समाज के प्रचार का भी काम करते थे। यह बात निजाम पुलिसों को पसंद नहीं आयी। तब मुझे (दत्तात्रय पाटील) खतम करने का उन्होंने निश्चय किया। इस बात का पता जब श्री किशनरावजी को लगा,तब तुरन्त ही अपने अन्य साथियों के द्वारा मुझे वहाँ से सुरक्षित अन्य जगह ले जाने की योजना बनाई। इस तरह उन्होंने मुझे प्रयत्नपूर्वक बचा लिया।

## किशनरावजी का अमर बलिदान

श्री किशनरावजी अपने साथियों के साथ निजाम शासक के विरुद्ध संघर्षरत थे। उस समय उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गोदावरीदेवी भी महिलाओं में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करती थी । उनके घर पर ÷ओ३म्' का झण्डा लहराता था। कानूनी रूप से ÷ओ३म्' ध्वज पर प्रतिबन्ध नहीं था। फिर भी द्वेष भावना से उद्विग्न मुसलमान गुंडों, कलेक्टर तथा पुलिस अधिकारियों ने रझाकारों को उकसाया और ओ३म् ध्वज को नीचे उतारने को कहा। तब रझाकार टेके दम्पती के घर आये। उस समय श्री व श्रीमती टेके ने ध्वज उतारने के लिए इन्कार किया, तब दोपहर स्वयं कलेक्टर महमद हैदरी, निजामी पुलिस और रझाकारों ने टेके के घर पर आक्रमण किया। दोपहर श्री टेके विश्राम कर रहे थे। इस निद्रावस्था में रझाकारों ने गोलियों से उनको भून डाला और उनकी मृत्यु हुयी।

## गोदावरी देवी का बलिदान -

श्रीमती गोदावरीदेवी को इन दुष्टों की योजना का पता चला और कलेक्टर की ÷**गोली चलाओ**' इस आवाज को सुनकर उन्होंने भी पिस्तौल चलायी ।

घमासान संघर्ष में ४ पठाणों को तत्क्षण मृत्यू के घाट उतार दिया। अनेकों रजाकारों,पुलिसों, रोहिलो का प्रतिकार करते-करते दि.६/५/१९४८ को श्री किशनरावजी एवं श्रीमती गोदावरीदेवीजी वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी मृत्यु के उपरान्त ही रजाकारों ने ओ३म् ध्वज को स्पर्श किया और टेके घर को आग लगाई। घर की चिता में ही दिवंगत टेके दम्पती के शव जलकर भस्म हुए। ऐसे क्रान्तिकारी महान दम्पत्ती की आत्माएँ अनन्तकाल के लिए ईश्वर सानिध्य में चली गई।

परमात्मा इस क्रान्तिकारी दम्पत्ती की दोनों दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें। यही प्रार्थना।

## हु.विश्वनाथ तेली एवं हु.मारुती माली का बलिदान -

किशनरावजी के शिष्य श्री विश्वनाथ तेली एवं मारुती माली ये दोनों आर्य समाज के प्रखर पुरस्कर्ता थे। मृत्युपर्यन्त वे रझाकारों के विरुद्ध लढते रहे तथा जनता में अन्याय एवं अत्याचारों के विरुद्ध वातावरण तैयार किया। लोगों को निडर बनाकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी। गांव-गांव जाकर वहाँ पर ११ युवकों की टोलियाँ बनायी। रझाकारों तथा निजामी अधिकारियों के विरुद्ध सशस्त्र सेना की स्थापना कर प्रखर आन्दोलन चलाया। उस्मानाबाद का तत्कालिन जिलाधिकारी हैदरी दि.०१ मई १९४८ के दिन ईट में पहुंच गया और यहीं पर रहने लगा। उसकी यह इच्छा थी कि ईट ग्राम व परिसर को ध्वस्त किया जाए। इस बात का पता चलते ही विश्वनाथजी एवं मारुतीरावजी ने अपनी युवक सेना एकत्रित की और डोकेवाडी ग्राम के गन्ने की खेती में छूपकर रहने की योजना बनाई,। जिसका एकमात्र उद्देश्य था यहांपर बस्तान जमाये कलेक्टर, डी.एस.पी., फौजदार आदियों को यहाँ से भगाना, किन्तु समय से पहले ही इस योजना का पता उन्हें लगा । उस समय सभी लोग भोजन कर बैठे ही थे । तब दोनों ओर से आक्रमण हुआ और गोलियों की घमासान बौछार से कुछ घायल हुये। अन्ततोगत्वा इसी में श्री विश्वनाथराव तेली और मारुतीराव माली का बलिदान हुआ।

ईट के इन बलिदानियों का वर्णन तत्कालिन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर गौरव के साथ अंकित है । धन्य है ईट परिसर की भूमि जिसने इन चार बलिदानियों को जन्म दिया। इन चारों हुतात्माओं को तथा इस पवित्र भूमि को हमारा शत्-शत् वन्दन ×

**(ईट के चार बलिदानी स्मृति समारोह के उपलक्ष्य में प्रसिद्ध लघुग्रंथ से साभार)**

# दक्षिण में आर्यों की बलिदान परम्परा

**- प्रा.राजेंद्र ÷जिज्ञासु'**

कभी-कभी मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मेरा जन्म देश धर्म पर जीने-मरनेवाले प्राणीवीरों की गौरव गाथा, उनका स्वर्णिम तथा प्रेरक इतिहास लिखने के लिए ही हुआ। आर्यसमाज के इतिहास में हुतात्माओं, प्राणवीरों पर जितना इस लेखक ने लिखा है, उतना और किसी ने नहीं लिखा। इस विनीत(लेखक) ने केवल आर्य समाज के झण्डे तले जीवन भेंट चढाने वालों पर ही नहीं लिखा, देश भर के शिरोमणि शूरवीरों पर भी लिखा है और लिखता चला आ रहा है, स्वातन्त्र वीर सावरकर, चाफेकर बन्धुओं, यतीन्द्रनाथदास, अशफाक उल्ला खाँ, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि सब पर दिल खोलकर लिखा है ।

विश्व में सर्वाधिक मौलिक जीवनियाँ लिखने का हमें सौभाग्य प्राप्त है। माँ की कोख से जब जन्म लिया, आँख खोली, कुछ होश सम्भाला, तो मेरे ग्रामीण पिता जी, मेरे परिवार व मेरे ग्राम के आर्यसमाज ने मुझे महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज, महर्षि दयानन्द, हुतात्मा पं.लेखराज, शूरता की शान वीर श्यामलाल, वीर वेदप्रकाश, भाई धर्मप्रकाश के नाम की लोरियाँ देनी आरम्भ कर दी। **आप यह कह सकते हैं कि मुझे तो घुट्टी में ही इतिहास पिलाया गया।** देश, धर्म, जाति के प्रति समर्पण भाव, प्यार, संस्कार और विचार इस लेखक को बपौती में प्राप्त हुए हैं।

उसी का फल है कि दूर दक्षिण में एक नन्हें कस्बा गुंजोटी में एक दिलजले आर्यवीर ने देश, धर्म पर, नारी जाति की लाज बचाने के लिए भरी जवानी वारकर बलिदान की जो अखण्ड परम्परा चलाई, उस पर लिखते व बोलते हुए मुझे अर्धशताब्दी बीत चुकी है । वीरवर वेदप्रकाश की उस सजीली परम्परा को ७९ वर्ष हो चुके हैं। दक्षिण भारत में भी इस परम्परा के प्राणवीरों पर इस लेखक से बढकर न तो किसी ने लिखा है और नही किसी ने ग्राम-ग्राम में घूम-घूम कर सामग्री की इतनी खोज की।

यह लेखक कहाँ खोज करने नहीं पहुँचा ? हुपला, गुंजोटी, उदगीर, बीदर, हल्लीखेड, भालकी, धारुर, कल्याणी, गुलबर्गा, हुमनाबाद, कलम, औराद शाहजानी, घोडवाडी.... जहाँ-जहाँ आर्यों ने अग्निपरीक्षा दी, संघर्ष किया, प्राण वारे× हम वहाँ बिन बुलाये पहुँचें।

अंग्रेजी राज में कई सभा व संस्थाओं

का गठन हुआ । कई सुधारक, विचारक आगे आये। प्रार्थना समाज, ब्राह्म समाज, रामकृष्ण मिशन आदि आदि। यह घोषणा करते हुए हमारी छाती अभिमान से फूलती है कि केवल एक ही धार्मिक संस्था है, जिसने जनजागरण, समाजसुधार, कुरीति निवारण, सद्ज्ञान प्रसार, जाति रक्षा व राष्ट्र के लिए एक से बढकर एक हुतात्मा दिये। ऋषि दयानन्द ने अपना गौरवपूर्ण बलिदान देकर प्राणोत्सर्ग करने की एक अखण्ड परम्परा चलाई। **ब्राह्म समाज, रामकृष्ण मिशन आदि से बलिदानियों की सूची कोई हो तो इतिहास प्रेमी या मीडिया के भाई सार्वजनिक करें।**

आर्यसमाज के बलिदानों की गौरव गाथा तो एक खुली पुस्तक है । महर्षि की परम्परा में बालक, युवा, वृद्ध, सन्यासी, गृहस्थी, किसान, विद्वान, व्यापारी, दीन, दरिद्र, शिशु सब बलिवेदी पर शीश चढाने की होड में सोत्साह आगे आये ।

यह आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द की परम्परा की ही विलक्षणता है कि आर्य ललनाओं ने भी देश धर्म की वेदी पर हँसते-हँसते अपने शीश चढाये। माता गोदावरी आदि आर्य देवियाँ देश की अखण्डता, जाति सेवा व धर्म रक्षा के लिये हैदराबाद स्टेट में जीवित जलाई गईं। **आधुनिक युग के भारतीय इतिहास में देशहित और कौन जीवित जलाया गया ?** मध्यकाल में यूरोप में तथा अन्यत्र भी मतान्ध शासकों ने विचारभेद के कारण बहुतों को जीवित जलाया । भारत में केवल आर्य वीरों व वीरांगनाओं को ही जीवित जलाया गया ।

**दक्षिण में आर्य समाज के बलिदानी इतिहास के जनक -**

क्या इतिहासकारों ने कभी दक्षिण के आर्य बलिदानियों के इतिहास की परम्परा की विलक्षणता को जानने का प्रयास किया? आज सामाजिक न्याय व सामाजिक समरसता की कुछ भारतीय राजनेता व राजनीतिक दल बहुत चर्चा करते हैं। ऐसी सोच के राजनेता व राजनीतिक दल बहुत चर्चा करते हैं । ऐसी सोच के राजनेता यह नोट कर लें कि ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा देश का पहला संगठन है, जिसने एक अत्यन्त दीन, दरिद्र परिवार में जन्मे एक आर्यवीर वेदप्रकाश को बलिदान की अखण्ड परम्परा चलाने के लिए इतिहास पुरुष बनाकर नमन किया है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा भी महाराष्ट्र के नगरों व ग्रामों में सभाओं का समय-समय पर आयोजन करके अपने पहले बलिदानी वेदप्रकाश जी तथा उनके पीछे-पीछे बलिवेदी पर शीष चढानेवाले सब स्त्री पुरुषों का पुण्य स्मरण कर कृतज्ञता करती हैं।

**सौभाग्यशाली वेदप्रकाश –**

आप देश के पिछले ७७ वर्षो के हिन्दुओं के नाम खोज-खोजकर देखेंगें, तो पता चलेगा कि वेदप्रकाश के बलिदान से प्रेरणा पाकर देशभकर में असंख्य परिवारों ने अपने नवजात बच्चों को वेदप्रकाश नाम देकर बलिदान की परम्परा के उस नायक को नमन किया है ।

वीर वेदप्रकाश इस दृष्टि से अत्यन्त भाग्यशाली निकले कि, उनके लहू का रंग उनके जन्मक्षेत्र में स्पष्ट दिखाई दे रहा है । महाराष्ट्र ने आर्यसमाज को कई कर्मठ सेवक, नररत्न दिये हैं, परन्तु गुंजोटी औराद ने तो हरिश्चन्द्र गुरुजी(स्वामी श्रद्धानन्दजी) के रुप में एक ऐसा कर्मठ धर्मरक्षक सुधारक, विचारक देश और समाज को दिया है जिसकी प्रेरणा से समाज को इसी क्षेत्र से श्री काशीनाथ गुरुजी, पं.रायाजी (राजवीरजी), श्री पं.प्रियदत्तजी, श्री रमेश ठाकुर, श्री डॉ.ब्रह्ममुनिजी, श्री विज्ञानमुनिजी, श्री शिवमुनिजी, श्री पं.रामचंद्रजी, श्री पं.विश्वनाथजी जैसे बीसियों निष्काम समर्पित समाज सेवी प्राप्त हुए हैं। सबके नाम गिनाना तो सम्भव ही नहीं ।

विचारशील इतिहास प्रेमी गम्भीरता से विचारेंगें, तो उन्हें यह मानना पडेगा कि इतने उत्तम कार्यकर्ताओं की इस क्षेत्र से प्राप्ति यह प्राणवीर वेद्रकाश जी के बलिदान का ही परिणाम है । आर्य सत्याग्रह के फील्ड मार्शल लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की भाषा का प्रयोग करके हम कहेंगें –

**÷वीरवर वेदप्रकाश ने लहू की खेती की। हरिश्चन्द्र गुरुजी ने अथक जागरूक कृषक के रुप में उसे खाद दी।तप से सींचा । वेद प्रकाश के रक्त का एक एक कण लहलहाती खेती का रूप धारण करके आज हमारे सामने है।'**

सीस देकर के वह तो अमर हो गया
मौत रो रो के हाथों को मलती रही ।

और वे पीछे-पीछे चल पडे ...।

संसार की यह रीति नीति है कि ÷चढ जा बच्चा सूली, भली करेंगे राम×' कहकर के लोग भोले भाले जन साधारण को आगे कर देते हैं और आप पीछे हट जाते या खिसक जाते हैं। वीर वेदप्रकाश के बलिदान के तुरन्त बाद भाई वंशीलाल तथा निर्भीक वीर देशबन्धु आर्य (औराद शाहजानी) गुंजोटी पहुँच गये । शूर शिरोमणि दीनबन्धु श्यामभाई ने हुँकार लगाई, **÷÷वेदप्रकाश तुम चलो, हम भी पीछे-पीछे आये।''**

इतिहास साक्षी है कि एक वर्ष के भीतर कर्मवीर व धर्मवीर वह दीनबन्धु श्यामलाल भी बलिदान पथ का पथिक बन गया।

## यह सबसे बडी आहुती थी –

वीर वेदप्रकाश ने अन्याय, अत्याचार, उत्पीडन, दमन और दलन के विरुद्ध जो बलिदान यज्ञ रचाया। उसमें दी गई यह पहली और सबसे बडी आहुती थी। भाई जी ने क्या किया और क्या दिया – यह एक लम्बी कहानी है। क्रूर शासक भाई जी के जन–मन पर प्रभाव से इतना घबराया और थर्राया कि भाई जी और उनके अनेक शिष्यों पर झूठे अभियोग चलाकर उन्हें नारकीय जेलों में डाला गया। चर्म रोग से जूझ रहे तपस्वी अटल ईश्वर विश्वासी, पीडितों के, दलितों के, महिलाओं के प्राणत्राण श्याम भाई को छल से बीदर जेल मे ंविष देकर मौत मे घाट उतारा गया।

१. जिसने महामारी फैलने पर अपने लहू के प्यासे एक मुसलमान जिसे उसके परिवार वाले भी छोडकर भाग गए थे, उसका उपचार किया, सेवा की और बचाया। उस महामानव को कुटिल, शोषक निजामशाही ने मारकर समझा कि वेदप्रकाश द्वारा प्रज्वलित की गई अग्नि अब बुझ गई।

२. मित्रो × भारत का एकमेव जननायक श्यामलाल था, जिस पर एक अपहृत की गई दलित देवी को बचाने के लिए एक लम्बा अभियोग चलाया गया। कई आर्यवीरों को साथ फंसाया गया। उसका एक पैर कोतवाली में होता था, तो दूसरा कोर्ट में। कभी जेल के भीतर, तो कभी बाहर× देश भर में महाशय कृष्ण आर्य नेता की लौह लेखनी ने इस अभियोग की धूम मचा दी। दलितों की दुहाई देनेवाले किसी राजनेता पर क्या कोई ऐसा केस कभी चला?

३. भाई श्यामलाल जी ने ÷आर्यवीर' पत्र (लाहौर) में छपे अपने लेख मे ंयह भविष्यवाणी की थी कि **÷वेदप्रकाश की हत्यारी सरकार सुन ले कि यह राज्य नहीं रहेगा, नहीं रहेगा और नहीं रहेगा।'**

आज हम सगर्व यह घोषणा करते हैं –

**गया जालिमों का निजामी जमाना।**
**निजाम हुकूमत बनी इक फसाना ।।**

पाकिस्तान के मासिक ÷कन्दील' ने सन् १६४८ में यथार्थ ही तो लिखा था कि निजामशाही तो सन् १६३९ के आर्य सत्याग्रह में ही समाप्त कर दी गई थी।

**(शेष अगले अंक में...)**

**– ÷वेदसदन', नई सूरज नगरी, अबोहर(पंजाब)**

* * *

समाचार दर्पण

# कु.मानसी लोहिया का सी.ए. परीक्षा में सुयश

परली के जानेमाने आर्य परिवार की सुपुत्री कु.मानसी नन्दकिशोर लोहिया ने हाल ही में सी.ए. की प्रथम परीक्षा पहले ही प्रयास में उत्तीर्ण की है । वाणिज्य विद्याशाखा की यह परीक्षा उत्तीर्ण करना बहुत ही कठिन माना जाता है । किन्तु बाल्यावस्था से ही प्रखर बुद्धिमत्ता का वरदान प्राप्त कु.मानसी ने अपूर्व परिश्रम के साथ यह सफलता हासील की। पहले सी.पी.टी. यह सी.ए. की प्रवेशपूर्व परीक्षा उत्तीर्ण की और अब सी.ए. अंतर्गत आई.पी.सी.सी.परीक्षा के दो समूहों की परीक्षा में भी इसने सफलता हासील की। आगामी तीन वर्षों में वह इन्टरशीप पूर्ण करेगी और बाद में अन्तिम परीक्षा देगी।

सी.ए. बनने पर कु.मानसी तथा उसके माता-पिता श्री नन्दकिशोर व सौ.प्रेमलता लोहिया का परली आर्य समाज की ओर से श्रावणी वेदप्रचार समारोह में अभिनन्दन किया गया। सभाप्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, आर्य समाज के मन्त्री उग्रसेन राठौर के करकमलों से यह सत्कार सम्पन्न हुआ। कु.मानसी प्रसिद्ध आर्यश्रेष्ठी स्व.श्री.रामपालजी लोहिया की पौत्री तथा वर्तमान प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया की भतीजी है ।

# अजमेर में २७, २८, २९ अक्टूबर को ऋषिमेला

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में ऋषि उद्यान, अजमेर में दि.२७, २८ व २९ अक्टूबर २०१७ को ऋषि मेले का भव्यरूप में आयोजन हो रहा है । इस उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रम तथा अन्तिम दिन महषि दयानन्द का १३४ वां बलिदान समारोह सम्पन्न होगा। इससे पूर्व दि.८ से १५ अक्टूबर के दौरान ÷योग साधना शिविर' का आयोजन किया गया है। ऋषि मेले के तीन दिनों में वेदों के प्रकाण्ड पण्डित आचार्य श्री सत्यानन्दजी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में ऋग्वेदपारायण यज्ञ ÷वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त' इस विषय पर राष्ट्रीय वेदगोष्ठी, गुरुकुलीय छात्रों के लिए चतुर्वेद कंठस्थीकरण वेदप्रतियोगिता, विद्वत् सम्मान समारोह तथा विभिन्न विषयों पर सम्मेलन आदि कार्यक्रम होंगे। इस महोत्सव में मार्गदर्शन हेतु आर्य जगत् उच्च कोटि के विद्वान, संन्यासी व कार्यकर्त्ता पधार रहें हैं।अत: अधिकाधिक संख्या में ऋषिमेलें पर पधारने का आवाहन परोपकारिणी सभा के संरक्षक गजानन्दजी आर्य, कार्यकारी प्रधान डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी एवं मन्त्री श्री ओममुनिजी ने किया है।

।।ओ३म्।।

**माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।**
**ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।।** (संत ज्ञानेश्वर)

# मराठी विभाग

**उपनिषद संदेश**

## शोध ईश्वराचा ×

**य आत्मा अपहतपात्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपासः। सत्यकामः सत्यसंकल्पः सोऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामान् यस्तमात्मानमनुविद्य विजानातीति।।**

(छान्दोग्योपनिषद-८/७/१)

जो परमेश्वर अपहतपात्मा म्हणजे सर्व पापे, जरा, मृत्यू, शोक, क्षुधा, व पिपासा यांनी रहित, सत्यकाम व सत्यसंकल्प आहे, त्याचा शोध घ्यावा व त्यालाच जाणण्याची इच्छा बाळगावी. परमेश्वराच्या संपर्कामुळे जो मुक्त जीव सर्व लोकांना प्राप्त होतो व त्याच्या सर्व इच्छा तृप्त होतात. जो परमेश्वराला जाणून घेऊन मोक्षाचे साधन करणे व स्वत:ला शुद्ध करणे या दोन गोष्टी जाणतो तो जीव मुक्ती प्राप्त करून शुद्ध दिव्य नेत्र आणि शुद्ध मन यांच्या योगाने सर्व गोष्टी पाहतो व त्या प्राप्त करून त्यांमध्ये रममाण होतो.

---

**दयानंद वाणी**

## दोष विद्वानांचाच ×

जोपर्यंत मानव जातीमध्ये चालू असलेला एकमेकविरुद्धचा मिथ्या मतमांतराचा वाद संपणार नाही, तोपर्यंत सर्वांना आनंद प्राप्त होणार नाही. जर आपण सर्व माणसे व विशेषत: विद्वान लोक ईर्ष्या व द्वेष सोडून देऊन सत्यासत्याचा निर्णय करून सत्याचे ग्रहण व असत्याचा त्याग करतील, तर ही गोष्ट मुळीच असाध्य नाही.

या विद्वानांमधील विरोधामुळेच सर्व लोक विरोधाच्या जाळ्यात अडकले आहेत. जर हे लोक आपल्याच स्वार्थाचा विचार न करता सर्वांच्या हिताचा विचार करतील तर तात्काळ एकमत होईल.

**(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास-अनुभूमिका)**

# मुक्ती संग्रामात ÷गूँज उठी' गुंजोटी ×

**– पं.रमेश तुळशीराम ठाकूर**(निवृत्त मु.अ.)

हैदराबाद संस्थान एक मोठे संस्थान होते. यात आजचा तेलंगण, आंध्र, कर्नाटक(गुलबर्गा, रायचूर, मराठवाडा) यांचा समावेश होता. निझामाच्या अधिपत्याखालील हे संस्थान × शिक्षणापासून वंचित असलेला × या भागातील लोकांना मातृभाषेतून शिकण्याची सुविधाच नव्हती. सामाजिक व धार्मिक कसलेच स्वातंत्र्य नव्हते. समारंभात मिरवणुकीत बँड(वाजंत्री) लावला जाई. पण काही ठिकाणी तो बंद ठेवून मूकपणे जाणे सक्तीचे होते. धार्मिक विधी करायलाही अडथळा केला जायचा. हवन(यज्ञ) करण्याचा प्रयत्न केला तर यज्ञकुंड जप्त केला जाई. सर्व प्रजेला गुलामगिरीचे जीवन जगावे लागे. गावातील सुंदर महिलांना पोलिस व अन्य अधिकाऱ्यांकडून बोलावून घेतले व त्यांचा उपभोग घेण्याचा प्रयत्न केला जाई. या विरुद्ध ÷ब्र' ही काढता येत नसे. अशा कितीतरी प्रकारच्या अनन्वित अत्याचारास तोंड द्यावे लागे. अन्याय निमुटपणे सहन करावा लागे. एकूण सारेच त्रस्त×

अशा ह्या भयग्रस्त वातावरणात आशेचा किरण दिसू लागला. तो पं.नरेंद्रजी, भाई श्यामलालजी व भाई बन्सीलालजी यांच्या रुपाने. कारण या मान्यवरांच्या साहाय्याने दिल्लीतील सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभेने प्रांतीय आर्य प्रतिनिधी सभेची हैदराबाद येथे स्थापना केली गेली. सभेचा कार्यभार या निर्भिक नेत्यांकडे सोपविला. यांच्या मदतीला इतरही अनेकांची साथ लाभली. निझाम शासनाच्या राजधानीतच हे सभेचे कामही सुरु झाले. श्यामलाल व बन्सीलाल बंधूंनी सारा मराठवाडा, कर्नाटकातील गुलबर्गा, रायचूर इत्यादी ठिकाणी पायी फिरून पिंजून काढला. या साऱ्या भागात महर्षि दयानंदांनी सुरु केलेल्या आर्य समाजाच्या शाखा सुरु करण्याचा जणू चंगच बांधला. या संस्थेने सर्वांना स्वराज्याचे, स्वातंत्र्याचे धडे दिले. लोक अक्षरश: भारावून गेले. निझाम सरकारच्या जुलुमी राजवटीला हे एक मोठे आव्हानच होते. खेडोपाडी आर्य समाजाची स्थापना होऊन लागली. विशीच्या वयातील तरुण मंडळी उभी करण्याच्या क्रियेला प्रचंड गती मिळाली. उदगीर, भालकी, बीदर, हुमनाबाद, गुलबर्गा, रायचूर, आळंद,बसवकल्याण, निलंगा, लातूर, मोगरगा, रेणापूर, माडज, गुंजोटी, मुरुम, कासार शिरसी, बडूर, वलांडी,उस्मानाबाद,

लातूर, केज अशा कितीतरी ठिकाणी आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. भाई श्यामलाल व भाई बन्सीलाल या जोडीने सातत्याने प्राण फुंकण्याचे काम केले. या सर्वांना मदतही अनेकांची होत होती, ज्यात शेषरावजी वाघमारे, पं.वीरभद्रजी आर्य, पत्तेवार, पं.प्रल्हादजी, पं.विनायकराव विद्यालंकार, पं.नरदेवजी स्नेही, पं.ज्ञानेंद्रजी शर्मा, पं.उत्तममुनीजी आदी मंडळी होती. या सर्वांनी एकसंध प्रयत्नाला सुरुवात केली. वर वर्णिलेल्या गावांचा जो उल्लेख केला, त्यापैकी अधिकांश गावे गुंजोटी गावाच्या नियंत्रणाखाली होती. निझाम शासनाने गुंजोटी या गावास ÷**पायगा**' हा दर्जा दिला होता. त्यावेळी पायगा म्हणजे जिल्ह्यापेक्षा विस्ताराने मोठे क्षेत्र× अशा पायग्याच्या ठिकाणी सर्व प्रकारची कार्यालये असायची. त्यात तहसील, न्यायालय, टपाल, कचेरी, घोड्यांचा पागा, जेलखाना(बंदिशाळा), पोलीस कमिशनरच्या दर्जाचा अधिकारी व त्यांचा लवाजमा असे सर्व शासकीय अधिकारी त्यांच्या कचेऱ्या असत. गुंजोटी हे तसे एक कमी लोकसंख्येचे गाव पण इथे वरील सर्व कार्यालये होती. गावाच्या मध्यवर्ती ठिकाणी प्रचंड मोठे पठार होते. त्याला ÷**गढी**' म्हणून संबोधले जाई. गढीवरच्या कार्यालयात जाण्यासाठी चढण असलेला शानदार रस्ता होता. मुख्य इमारती पर्यंत तीन विशालकाय कमानी होत्या. मुख्य इमारतीत जाण्यासाठी वीस फूट लांबीच्या व प्रत्येकी नऊ इंच उंचीच्या सुमारे वीस पायऱ्या होत्या. इमारतीला प्रचंड मोठा दरवाजा. आत लिंबाची खूप मोठी झाडे होती. त्यात अनेक दालने होती. आत चार मोठी मैदाने होती. एक विशालकाय असे सभागृह सुमारे १००X ०चौ. फुटाचे असावे. या सभागृहाला नक्षीकाम केलेले खांब होते. सभागृहात जाण्यासाठीही २० फुट लांबी असलेल्या सुमारे २० पायऱ्या होत्या. ÷पायगा' म्हणून या गुंजोटी गावाची निवड बहुधा यासाठी केली होती की, येथून गुलबर्गा, रायचूर, हैदराबाद, हुमनाबाद, जहिराबाद, बीदर, देगलूर, उदगीर, बीड, लातूर, केज, धारूर इत्यादींना सहज जोडले गेलेले होते. दुसरे महत्वाचे कारण म्हणजे गुंजोटीपासून अवघ्या १५ मैलावर (म्हणजे सुमारे २५ ते ३० कि.मी.) इंग्रजांची राजवट होती. तसे गुंजोटी गाव हैदराबाद संस्थानाचे सीमेवरील गाव. म्हणून याच्या नियंत्रणासाठी सर्व कार्यालये आवश्यक होती. येथून सर्व नियंत्रण केले जाई व दहशत निर्माण करण्यासाठी तेवढाच अत्याचारही केला जाई. हे सर्व गुंजोटीने पाहिले आहे व भोगले आहे. या ठिकाणी एकमेव उर्दू माध्यमाची शाळा होती. मराठी माध्यमाला थाराच नव्हता. कुणी शाळा काढण्याचा प्रयत्न केलाच, तर ती तितक्याच

तत्परतेने बंद पाडली जाई.

या परिसरात गुंजोटी गावापासून सुमारे ३० कि.मी. अंतरावर लोहारा गावाशेजारी हिप्परगा या गावी स्वामी रामानंद तीर्थ यांनी शाळेची स्थापना केली. ही एक राष्ट्रीय शाळा × पण कांही कारणाने ती बंद करावी लागली. हीच शाळा नंतर अंबाजोगाई येथे सुरु करण्यात आली. हिप्परगाव शाळेची प्रेरणा धेऊन सन १९२७ साली गुंजोटी येथेही शाळेची स्थापना झाली, ÷श्रीकृष्ण विद्यालय' या नावाने या शाळेची प्रेरणा श्री हरिपंत राखेलकर व श्रीनिवासराव शाईवाले यांनी घेतली व अत्यंत कष्टाने ही शाळा चालूच राहिली. (आजही ही शाळा मोठ्या प्रगतीपथावर आहे. आज या संस्थेने वटवृक्षाचे रूप धारण केले आहे.)

गुंजोटी गावच्या मध्यवर्ती ठिकाणी एक मठ होते. त्यास शिनाईचे मठ म्हणायचे. याच मठात आर्य समाजचेही काम चालू झाले. मठात प्रशस्त मैदान होते. मैदानात मल्लखांब, लाठी, तलवार याचा सराव घेतला जायचा. यामुळे तरुण मुले तत्परतेने हजर राहात. या मठातच एक पितळी मोठी घंटा होती. अचानक उद्भवलेल्या संकटप्रसंगी घंटा वाजवली जायची. घंटेच्या निनादाने गावातील सर्वजण त्या मठात एकत्रित होत असत. तेथे संकटसमयी सर्वांनी कसे राहावयाचे? कसा प्रतिकार करावयाचा ? हे सांगितले जाई. अगदी भयग्रस्त समयी देखील सारे निर्भयपणे तोंड देण्यासाठी तयार राहात. यामुळे जुलमी रझाकाराला देखील बेडरपणे तोंड देत असत. प्रत्येक महिलेला लाल तिखटाची पुडी ठेवण्याची सूचना असे. त्याप्रमाणे महिलाही कायम सज्ज होत्या. एखाद्याने काही अतिप्रसंग करण्याचा प्रयत्न केलाच, तर त्याच्या तोंडावर लाल तिखटाचा मारा करून महिला स्वत:चा बचाव करून घेत. या सर्व कामात गावातील अनेकजण सदैव तयार व जागरुक असत. यात सर्वश्री टोपणप्पा बबले, गंगाराम आययनले, वीरुपाक्षय्या स्वामी, कंठाप्पा देशमुख, शिवरुद्रय्या स्वामी,बसप्पा आगसे, दत्तू चौधरी,बळीराम चौधरी, दत्तोपंत चव्हाण,कृष्णाजी चव्हाण दंडेवाले, मुकुंदराव साळुंके, हंबीरराव चव्हाण, रामराव पाटील, माणिक सिंहजी चौहान, तुळशीराम ठाकूर, काशीनाथ शिंदे, रामराव शिंदे,मारुतीराव सोमवंशी, माणिकबाबा, बाबाराव देशपांडे, सांयबा कवठे, मारुती परीट, नरसोबा कडदोरे, दासमय्या हरके इ. अशा किती जणांची नावे सांगावीत? प्रत्येक घरातील कर्ता माणूस अगदी तयारच, तितकाच खंबीर, कणखर, इथे जाती-भेदाचा गंधही नव्हता, श्रीमंत-गरीब असाही फरक नव्हता. प्रत्येकाला प्रत्येकजण आपलाच वाटायचा. त्याची आई ही माझी

आई, बहीण वाटायची. याच मंडळींनी पुढे हैदराबाद मुक्तीसाठी घोषित सत्याग्रहात सहभागी होऊन जेल भोगली, कोणीही डगमगला नाही. पुढे त्या सर्वांचा सन्मानपत्र व ताम्रपत्राने शासनाने गौरवही केला.

सत्याग्रहात सहभागी झालेल्यांना हैदराबाद, रायचूर, गुलबर्गा आदी जेलमध्ये डांबण्यात आले. खाण्यासाठी सिमेंट मिश्रित भाकरी दिली जायची. खूप त्रास दिला जायचा, पण यातले कोणीही डगमगले नाहीत. गुंजोटीचा असा हा दैदीप्यमान इतिहास आहे. म्हणूनच गुंजोटी ही गुंजोटी नाही तर ही निझामाच्या जुलमी राजवटीत ÷गूँज उठी'' ठरलेली गुंजोटी आहे. इतिहासालाही याचा अभिमान वाटावा अशी ही गुंजोटी× या पुण्यभूमीस व सर्व देशभक्त स्वातंत्र्यवीर सैनिकांना शतश: नमन× **(क्रमश:)**

**-३६, ÷यज्ञ', इंद्रप्रस्थ गृह निर्माण संस्था,**
**स्वामी समर्थ आध्यात्मिक केंद्राजवळ,**
**गजानन महाराज मंदिर परिसर,**
**गारखेडा, औरंगाबाद**

# महाराष्ट्रातील विद्धानांना नम्र आवाहन

सर्व मराठी भाषिक विद्वान, व्याख्याते, भजनीक व प्रचारकहो ×

सभेच्या श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमांना आपण वेळ दिल्याबद्दल सर्वप्रथम आपणां सर्वांचे मन:पूर्वक अभिनंदन× आपल्यामुळे वेदांचे विचार ग्रामीण भागातील सामान्य जनतेपर्यंत पोहोंचण्यास मदत मिळाली. यानिमित्त ऋषिऋणातून मुक्त होण्याचा अल्पसा प्रयत्न आपणांकडून होतोय, ही आनंदाची गोष्ट...× मित्रहो× त्याग, तळमळ व समर्पणाशिवाय कांहीही साध्य होत नाही. ईश्वराने आपणास वेदमार्ग दाखविला... अन्यथा आपली काय अवस्था झाली असती? म्हणूनच हे वेदज्ञान प्रचारित करण्यासाठी सर्वांनी कोणतीही अपेक्षा न ठेवता प्रयत्नशील राहिले पाहिजे. सभेने आपणांस वेदप्रचारक म्हणून लोकांपर्यंत जाण्याची संधी दिली. आपणही जे कांही मिळाले, त्यात समाधान बाळगले. सभा ही आपलीच समजून दक्षिणेची अपेक्षा न करता दयानंदांच्या ऋणातून मुक्ती हीच आपली दक्षिणा समजावी. या कार्यात वेळप्रसंगी स्वखर्चाने प्रवास देखील केला. हे खरोखरच परोपकाराचे कार्य होय. भविष्यातही आपणाकडून अशाच सहकार्याची अपेक्षा...× आपणां सर्वांचे मन:पूर्वक आभार ×

आभारोत्सुक :- महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा

# संस्कृतला मिळावा राष्ट्रभाषेचा दर्जा ×

– डॉ.एस.एन.पठाण
(माजी कुलगुरु, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विद्यापीठ, नागपुर)

÷राष्ट्र' या शब्दाची व्याख्या करतांना राज्यशास्त्रात असं म्हटलं आहे की, ज्या देशात एकाच जातीधर्माचे लोक राहतात व ज्या देशात एकच भाषा बोलली जाते, अशा देशाला ÷राष्ट्र' असे म्हणतात. राज्यशास्त्राच्या या कसोटीवर जर आपल्या देशाबद्दल बोलायचं झालं, तर आपली फार मोठी पंचायत होईल× कारण या देशात विविध जाती, धर्माचे लोक राहतात. जवळ जवळ मान्यताप्राप्त २२ भाषा इथं बोलल्या जातात. विविध धर्म, विविध जाती व विविध भाषा हीच खरी आपल्या देशाची ताकद आहे. त्यामुळंच विविधतेतून एकता ही भारताचं वैशिष्ट्य आहे, असं आपण नेहमी जगाला सांगत असतो; परंतु त्यामुळं या देशात राष्ट्रबांधणीचं कार्य आपल्यापुढं एक आव्हान ठरतं× आपल्या देशाबद्दल प्रत्येक माणसाला अभिमान वाटावा व आपली राष्ट्रभावना जागृत व्हावी, यासाठी भारतीय संस्कृतीनुसार **÷राष्ट्र देवो भव'** असं म्हटलेलं आहे. कधी कधी तर प्रत्येकाला प्रिय असणाऱ्या आपल्या ÷आईची उपमा' या देशाला दिली जाते व ÷भारत माता' असं म्हटलं जातं. केवळ विविध धर्माच्या व जातीच्या लोकांमध्ये राष्ट्रभावना निर्माण व्हावी, म्हणून राष्ट्राला देवाची अथवा आईची उपमा देणं हे स्वाभाविक आहे, हे कुणाही धर्माविरुद्ध अथवा समाजाविरुद्ध आहे, असं मला मुळीच वाटत नाही. अर्थात हे तार्किकदृष्ट्या समजून घेण्याची गरज आहे.

या देशातील विविध जाती, धर्माचे लोक ही जर आपली ताकद असेल, तर मग या देशात एकाच धर्माचे लोक असावेत, असं म्हणणं केवळ हास्यास्पद ठरेल. कारण इतर धर्मीय परके नसून याच देशाचे नागरिक आहेत व त्यांनी या देशाला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यामध्ये व देशाच्या विकासात मोठं योगदानही दिलं आहे. ते कुठं जाणार ? प्रश्न राहिला भाषेचा. या देशाला स्वातंत्र्य मिळून ७० वर्षे झाली, तरी आपण अद्याप आपली राष्ट्रभाषा कोणती याचा भारतीय राज्यघटनेत उल्लेख करू शकलेलो नाही. परंतु भारतीय घटनेच्या ३४३ व ३५१ कलमानुसार हिंदी ही केंद्र सरकारची अधिकृत भाषा आहे. दक्षिण भारत हे स्वीकारायला तयार नाही. त्यांना हिंदी बोलणं अवघड जातं. सध्या यावरुन कर्नाटकमध्ये वादंग सुरु आहे. अशावेळी या संपूर्ण देशाला स्वत:ची एकच समृद्ध

भाषा राष्ट्रभाषा असावी असं म्हटल्यास सद्य:स्थितीत **÷संस्कृत'** भाषेशिवाय दुसरा कोणताही पर्याय आपल्यापुढं असू शकत नाही. अर्थात असं म्हणणं म्हणजे आपण कुणा दुसऱ्या भाषेचा दु:स्वास करतो, असं मुळीच नाही.

शुद्ध, संस्कारित, अचूक, सुसंघटित असा ÷संस्कृत' शब्दाचा अर्थ आहे. देववाणी असं संस्कृतला उगीचच म्हटलेलं नाही. साऱ्या जगानं संस्कृतला दुर्मिळ उदात्तता असलेली भाषा म्हणून मान्यता दिली आहे आणि आपल्या भारतीय संस्कृतीत संस्कृतला विशेष स्थान आहे. संस्कृत ही आपले कवी, वैज्ञानिक,तत्वज्ञ, गणितज्ञ, नाटककार, व्याकरणकार, न्यायविद अशा सर्वांचीच भाषा होती. व्याकरणाच्या क्षेत्रात पाणिनी आणि गणितात आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त आणि भास्कराचार्यांनी तर चरक आणि सुश्रूतांनी औषधीशास्त्राच्या क्षेत्रात ज्ञानाची नवी क्षेत्रं उघडली. तत्त्वज्ञानाच्या क्षेत्रात न्याय सिद्धान्ताचा उद्गाता गौतम, बुद्धचरिताचा लेखक अश्वघोष, सांख्य सिद्धान्ताचा संस्थापक कपिल, शंकराचार्य, बृहस्पती यांनी तत्वज्ञानाची अत्यंत व्यापक अशी मांडणी केली. जैमिनीच्या मीमांसाविषयक सूत्रांनी तर धर्मग्रंथ, तत्त्वज्ञान, व्याकरण आयि कायद्याच्या शास्त्राची पायाभरणी केली. साहित्याच्या क्षेत्रातील संस्कृत भाषेचं योगदान हे प्रथमश्रेणीचं आहे. कालिदास (शाकुंतल, मेघदूत, मालविकाग्निमित्र), भवभूती (मालतीमाधव, उत्तररामचरित) आणि व्यास व वाल्मिकींची महाकाव्य जगभर प्रसिद्ध आहेत.

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांनी संस्कृत भाषा ही ÷राष्ट्रभाषा' व्हावी म्हणून आग्रह धरला होता. ÷राष्ट्रभाषा' या विषयावर संविधान सभेत चर्चा चालू असतांना पश्चिम बंगालमधील सन्माननीय सदस्य नझिरुद्दीन अहमद म्हणाले होते की, संस्कृत ही सर्वोत्कृष्ट भाषांपैकी एक भाषा आहे व म्हणून ती राष्ट्रभाषा म्हणून स्वीकारली जावी. संस्कृत भाषेचं वैभव सांगतांना अहमद यांनी संस्कृतबद्दल अनेक जागतिक विद्वानांची मतं संविधानसभेत मांडली. उदाहरणार्थ, मॅक्समूलर यांच्या मते, ÷संस्कृत ही जगातील सर्वोत्तम आणि सर्वात परिपूर्ण अशी भाषा आहे.' प्रा.व्हटनी म्हणतात, ÷अतुलनीय अशा पारदर्शी अभिव्यक्तीच्या वैशिष्ट्यांमुळे इंडो यूरोपियन भाषांच्या कुटुंबात प्रथम स्थानावर असण्याचा संस्कृत भाषेचा अधिकार वादातीत आहे.' एम.ड्युकोइस यांच्या मते, ÷संस्कृत ही युरोपातील आधुनिक भाषांचे उगमस्थान होय.' प्रोफेसर वेबर यांच्या मते, ÷पाणिनीचं व्याकरण हे जगातील सर्वांत छोटं आणि पूर्ण असं व्याकरण आहे', प्रा.विल्सन यांच्या मते,

÷हिंदूशिवाय अन्य कोणत्याही देशाला संस्कृतसारखं अचूक ध्वनिशास्त्र शोधून काएता आलेलं नाही.' प्रोफेसर थॉम्सन यांच्या मते, ÷संस्कृतातील व्यंजनांची योजना हे मानवी प्रज्ञेचं असामान्य असं उदाहरण आहे.' जागतिक कीर्तीचे संस्कृत पंडित व ढाक्का विद्यापीठातील अधिव्याख्याते डॉ.शाहीदुल्लाह यांच्या मते, ÷संस्कृत ही प्रत्येक व्यक्तीची भाषा आहे, मग तो कोणत्याही वंशाचा का असेना?'

संस्कृतचा योग्य तऱ्हेने अभ्यास केल्यास, असं लक्षात येतं की, ती भाषा सर्व पैलूंबद्दल जिज्ञासेनं प्रश्न विचारणाऱ्या माणसांची होती. यामुळंच वाङ्मय, तत्त्वज्ञान, विज्ञान इत्यादी सर्व ज्ञानशाखांमध्ये संवादाची आणि अभिव्यक्तीची भाषा म्हणून संस्कृतचा उपयोग करण्यात आला. ÷अवधान शतक' यासारखे महायानी बुद्ध संप्रदायाचे ग्रंथ हे संस्कृतातच होते. स्वतंत्र प्रज्ञेने विचार करणाऱ्या विद्वानांची भाषा संस्कृत होती. त्यांनी व्यापक विषयांवर आपले विचार मांडले. कालांतराने लोकांमधील या भाषेबद्दलच्या अज्ञानामुळं, हितसंबंधी गटांनी ही भाषा फक्त धर्मगुरुंपुरती मर्यादित केली. या धर्मगुरुंनीच संस्कृत श्लोकांचा उपयोग मंत्रांसारखा करून लोकांच्या अज्ञानाचा गैरफायदा घेतला. या मंत्रांचे साध्या भाषेत रुपांतर केलं, तर असं लक्षात येईल की, त्यांच्यात अनेक उदात्त विचार आणि कधी कधी अत्यंत साधं सरळ तत्त्वज्ञान आहे, पण त्यात काहीही चमत्कार, जादू करण्यासारखं नव्हं. लोकांच्या अज्ञानामुळं त्यांना असं वाटलं की, या मंत्रांतील अक्षरांचा उच्चार केल्यास त्यांच्या इच्छांची पूर्तता होईल. अज्ञानाचा हा बुरखा आता फाडून टाकला पाहिजे.

देशाच्या सांस्कृतिक विकासात संस्कृत या भाषेची मोलाची भूमिका आहे. आज देशात संस्कृतला योग्य तेवढा मान मिळत नाही. सर विल्म जोन्स या थोर विद्वानानं ज्या भाषेला ग्रीक भाषेपेक्षा अधिक निर्दोष, लॅटिनपेक्षा अधिक शब्दसामर्थ्य असलेली आणि या दोन्ही भाषांपैकी अधिक सुसंस्कृत भाषा असं संस्कृतबद्दल म्हटलं होतं, त्या भाषेला आज मृतभाषा मानली जाते आणि ती शिकवणाऱ्या शिक्षकांना चांगले दिवस नाहीत,यावरुन आपलं किती अध:पतन झालं आहे, हेच यातून दिसून येतं. विविध विषयासंबंधीच्या ज्ञानामुळं समृद्ध असलेली ही संस्कृत भाषा जनसामान्यांपर्यंत पोहोचली पाहिजे. आपल्या संस्कृतीचे सर्व पैलू या भाषेशी अविभाज्यपणे जुळलेले आहेत.

**(साभार–÷दै.पुण्यनगरी' दि.१२.०८.१७)**

**–सल्लागार, विश्वशांती केंद्र,**
**आळंदी जि.पुणे/९८२२३६२६०३**

## संस्कृत राष्ट्रभाषा असावी हा डॉ.आंबेडकरांचा प्रस्ताव

# ÷संस्कृत ब्राह्मणांची नव्हे, ज्ञानाची भाषा'

### - माजी केंद्रीय मंत्री मुरलीमनोहर जोशी

**ज्ञान-विज्ञानाची अधिष्ठात्री व सर्व भाषेची जननी म्हणून ओळखली जाणारी संस्कृत ही देववाणी भाषा केवळ ब्राह्मण समाजाची भाषा नसून सर्व मानवमात्राची ज्ञानभाषा आहे. दैदीप्यमान भारताला सर्व दृष्टीने शक्तिसंपन्न करण्यासाठी या प्राचीन भाषेला सर्वव्यापी बनविण्याची गरज आहे. याकरिता शासनाने पुढाकार घ्यावा. असे उद्‌गार माजी केंद्रीय मंत्री व भाजपाचे ज्येष्ठ नेते डॉ.मुरली मनोहर जोशी यांनी काढले.**

स्व.प्रज्ञाभारती डॉ.श्रीधर भास्कर उपाख्य दादासाहेब वर्णेकर जन्मशताब्दी महोत्सव समिती व अभ्यंकरनगर नागरिक मंडळ यांच्या संयुक्त विद्यमाने वर्णेकर यांना मानवंदना देण्यासाठी १० सप्टेंबर रोजी कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. सायंटिफिक सभागृहात आयोजित या कार्यक्रमात बोलतांना डॉ.मुरलीमनोहर जोशी यांनी संस्कृतचे महात्म्य प्रतिपादित केले. व्यासपीठावर केंद्रीय मंत्री व समितीचे स्वागताध्यक्ष नितीन गडकरी होते.

डॉ.श्री जोशी पुढे म्हणाले - ÷भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांनी संस्कृत ही भाषा स्वतंत्र भारताची ÷राष्ट्रभाषा' व्हावी, असा प्रस्ताव संविधान सभेत ठेवला होता. आंबेडकरांसह संविधान सभेतील अन्य नेत्यांनीही हा प्रस्ताव मांडला होता.' ते पुढे म्हणाले, ÷संस्कृत आपल्या राष्ट्रजीवनाचा अविभाज्य भाग बनावा, यासाठी श्री भा.वर्णेकर यांनी आयुष्य वेचले. संस्कृत ही ज्ञानभाषा आहे. ही भाषा आपल्या देशाची राष्ट्रभाषा व्हावी, असा प्रस्ताव संविधान सभेत डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्यासह अन्य नेत्यांनी मांडला होता.'

**संस्कृतला जातीधर्माशी जोडू नका-गडकरी**

केंद्रीय रस्ते वाहतुक मंत्री श्री नितीन गडकरी म्हणाले- संस्कृत बाबतचे गैरसमज दूर झाले पाहिजेत. संस्कृतला लोकाभिमुख करून समाजाला सर्व स्तरापर्यंत पोहोचविण्याची गरज आहे.संस्कृतचे योग्य मार्केटिंग करण्यात संस्कृतप्रेमी कमी पडले आहेत. नागपुरच्या कालिदास संस्कृत विद्यपीठाच्या स्थापनेच्या वेळी कांही आमदारांनी संस्कृत ही ब्राह्मणांची भाषा आहे असा कांगावा केला होता.

संस्कृत ब्राह्मणांची भाषा आहे, असे त्यावेळी कुणीही म्हटले नव्हते. संस्कृत

भाषा ही एकतेची भाषा आहे. मात्र, राजकारणामुळे संस्कृतचा पराभव झाला. देशातील संस्कृत, संस्कृत विद्यापीठांची अवस्था वाईट आहे. संस्कृतला शिक्षकही मिळत नाही. संस्कृत शिक्षण अनिवार्य करण्याची गरज आहे, असे सर्वोच्च न्यायालयाच्या न्यायमूर्तींनीही म्हटले होते, असे जोशी म्हणाले. संस्कृतमध्ये सर्वच विज्ञानांचा समावेश असून ही केवळ पूजाअर्चनेची भाषा नाही. तसेच संस्कृतला अर्थकारी केल्याशिवाय तिला लोकमान्यता मिळणार नसल्याचेही जोशी यांनी अधोरेखित केले.

— — — — — —

**वृत्तांत** **सभेच्या वेदप्रचार उपक्रमाला भरभरून प्रतिसाद**

# राज्यात व्यापक स्वरुपात श्रावणी वेदप्रचार

वेदप्रतिपादित मानवीय मूल्य आणि तत्वज्ञानाचा सर्वदूर प्रसार व्हावा व वेदांची विशुद्ध अशी कल्याणकारी विचारसरणी सामान्य जनतेपर्यंत पोहोचावी या पवित्र उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे दरवर्षीप्रमाणे आयोजित केला जाणारा राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार उपक्रम याही वर्षी अतिशय प्रभावीपणे यशस्वी ठरला. राज्यातील ठिकठिकाणच्या एकंदरीत १३५ पेक्षा अधिक आर्य समाजांमध्ये विविध विद्वान व भजनीकांमार्फत यावर्षी दि.२४ जुलै ते २१ ऑगस्ट दरम्यान हा वेद प्रचार अतिशय उत्साहात संपन्न झाला.

या श्रावणी वेदप्रचाराकरिता उ.प्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ, ओरिसा, कर्नाटक,दिल्ली, टंकारा, कर्नाटक आदी ठिकाणांहुन १५ विद्वान व भजनोपदेशकांना आमंत्रित करण्यात आले होते. तर राज्यातील जवळपास ६० विद्वानांनी यात सहभाग नोंदविला.

पं.शिवकुमार शास्त्री व पं.प्रदीप आर्य यांनी संभाजीनगर, परळी, लातूर(गांधी चौक) व सोलापुर येथील आर्य समाजांमध्ये अतिशय उत्कृष्टपणे प्रचार केला. पं.महेंद्रपाल आर्य व पं.श्यामवीर राघव यांनी जालना, परभणी, नांदेड, देगलूर, धर्माबाद, मुदखेड या ठिकाणी वैदिक विचारांचा प्रभावीपणे प्रसार केला. पं.ब्रिजेशजी शास्त्री व स्वामी अमलानंदजी यांनी रेणापुर, लातूर(रामनगर), शिवणखेड, किल्लेधारुर, अंबाजोगाई येथे वैदिक तत्वज्ञान विषद केले. त्यांचेसोबत कांही ठिकाणी दिल्लीचे आचार्य शिवकुमारजी देखील होते. पं.धर्ममुनिजी क्रांतिकारी यांनी व भजनोपदेशक पं.संदीप वैदिक यांनी उमरगा, गुंजोटी, औराद, निलंगा, शहाजानी औराद व उदगीर येथे अतिशय चांगल्या पद्धतीने आर्य समाजाची शिकवण

पटवून दिली. पं.चंद्रपालजी आचार्य यांनी व पं.रामवीर आर्य यांनी पुण्यातील वारजे, नानापेठ व पिंपरी या तीन आर्य समाजात केलेल्या कार्यक्रमांची आर्य जनतेने फारच प्रशंसा केली. तर डॉ.कमलनारायणजी आचार्य व पं.रामवीरजींनी नाशिकमधील देवळाली कॅम्प, भगुर व पंचवटी या आर्य समाजांसह धुळे येथील आर्य समाजात वेदप्रचार केला. त्याचबरोबर पं.जयेंद्र शास्त्री व देवेंद्र आर्य यांनी हिंगोली शहरासह त्या जिल्ह्यातील व नांदेड जिल्ह्यातील हदगांव, निवघा, तामसा, भोटेगांव, तळणी, शिऊर आदी गावांमध्ये वेदप्रचाराचे कार्य केले. पं.सुधाकरजी शास्त्री, पं.प्रतापसिंह चौहान, पं.राजवीरजी शास्त्री, पं.अरुणकुमार सांगळे, आर्यमुनिजी, तात्याराव जगताप, पं.हरिओम कराळे, संतोष आर्य, वशिष्ठ आर्य, पं.सोगाजी घुन्नर, शिवा निकम, प्रा.वीरेंद्र शास्त्री, श्रीराम आर्य, ज्ञानकुमार आर्य, प्रा.चंद्रेश्वर शास्त्री, प्रा.अखिलेश शर्मा, तानाजी शास्त्री, भागवतराव आघाव आदींनी या प्रचार कार्यात भाग घेतला.

## महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.व.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

शोकवार्ता

# जगदीश सूर्यवंशी यांचे निधन

राज्य सहकारी कंझ्युमर फेडरेशनचे संचालक व औरंगाबाद येथील सीडको आर्य समाजाचे मंत्री श्री जगदीश सूर्यवंशी यांचे दि.११ जुलै २०१७ रोजी दुपारी ह्ृदयविकाराने आकस्मिक निधन झाले. ते ६६ वर्षांचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी, दोन मुले, एक मुलगी व जावई असा परिवार आहे.

स्व.श्री सूर्यवंशी हे पू.स्वामी श्रद्धानंद (हरिश्चंद्र गुरुजी) यांचे शिष्य होते. आर्य समाज सीडको, औरंगाबाद च्या जडणघडणीत त्यांचा सिंहाचा वाटा होता. मूळचे निलंगा तालुक्यातील अंबुलगा(बु.) येथील रहिवाशी श्री जगदीशजी हे माजी जि.प.सदस्य श्री ओमप्रकाश आर्य यांचे बंधू होते. औरंगाबाद परिसरात एक सामाजिक कार्यकर्ता व आर्य विचाराचे अनुयायी म्हणून त्यांची ओळख होती. श्री सूर्यवंशी यांनी आपल्या वडिलांच्या स्मरणार्थ महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेला रु.२२,०००/- (रु.बावीस हजार) ची देणगी पण दिली आहे. सभेत तिची स्थिरनिधी स्थापित झाली असून तिच्या व्याजावर वेदप्रचाराचे कार्य चालते. गेल्याच महिण्यात ते परळीला आले व त्यांनी सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजींची भेट घेऊन आर्य संगठन वाढीविषयी चर्चा केली होती.

स्व.सूर्यवंशी यांच्या पार्थिवावर रात्री १० वा. सीडको एन-६(म.न.पा.) च्या स्मशानभूमीत पूर्ण वैदिक पद्धतीने पं.रमेश ठाकूर व ॲड.जोगेंद्रसिंह चौहान यांच्या पौरोहित्याखाली अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सभेचे शुद्धिसंस्कार प्रमुख श्री संतोष आर्य यांनी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे श्रद्धांजली वाहिली. यावेळी दत्तात्रय मुळे, ॲड.शिवाजी शिंदे, डॉ.सुजाता करजगांवकर, संतोष हिरास यांच्यासह विविध क्षेत्रातील मान्यवर उपस्थित होते.

# पांडुरंग शिंदे यांचे निधन

साकोळ (ता.शिरुर अनंतपाळ) येथील आर्य समाजाचे माजी उपप्रधान व माजी सैनिक श्री पांडुरंग गोविंदराव शिंदे यांचे गेल्या महिन्यात दि.३ ऑगस्ट रो सायंकाळी कर्करोगामुळे निधन झाले. मृत्यूसमयी ते ७० वर्षे वयाचे होते.

त्यांच्या पश्चात् पत्नी, तीन मुले, दोन मुली, सुना, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. श्री शिंदे १५ वर्षांपूर्वी भारतीय

सैन्य दलातील देशसेवेतून निवृत्त झाले होते. शेतीव्यवसायासोबतच आर्य समाजाचे क्रियाशील कार्यकर्ते म्हणूनही कार्य केले होते. आर्य समाजाच्या विविध कार्यक्रमात त्यांचा हिरीरीने सहभाग होता. त्यांच्या पार्थिवावर आर्य समाजाचे प्रधान श्री सुभाष साकोळे, संजय जोशी, धोंडूप्रसाद तिवारी आदींनी वैदिक पद्धतीने दुसऱ्या दिवशी दुपारी अंत्यसंस्कार केले.

# पं.सुधाकर शास्त्री यांना पत्नीशोक

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपदेशक, पुरोहित व मराठी भाषी वेदप्रचारक पं.श्री सुधाकरजी शास्त्री यांच्या धर्मपत्नी सौ.शोभादेवी यांचे दि.१९ ऑगस्ट २०१७ (शनिवार) रोजी दुपारी पुणे येथील जहांगिर रुग्णालयात प्रदीर्घ आजाराने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ५१ वर्ष वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे पति, दोन मुले, एक मुलगी, वडील, भाऊ असा परिवार आहे.

स्व.सौ.शोभादेवी गेल्या ५-६ वर्षांपासून आजारी होत्या. त्यांच्यावर लातूर, बार्शी, पुणे या ठिकाणच्या तज्ज्ञ चिकित्सकांकरवी उपचार करण्यात आले. पण प्रयत्नांची पराकाष्ठा करुनही यश आले नाही. शेवटी त्यांची प्राणज्योत मालवली. त्यांच्या पार्थिवावर पुण्यातील औंध परिसरात विद्युतदाहिनी स्मशानभूमीत वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. पं.विश्वनाथ शास्त्री यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला. यावेळी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री माधवराव देशपांडे, आर्य समाज पिंपरीचे मंत्री जगदीश वासवाणी, उत्तमराव दंडिमे, माजी मंत्री हरिकृष्ण वाप्ता, पं.गणेश आर्य, जयराम धर्मदासानी, विजयकुमार कानडे, वैद्य विज्ञानमुनी, नयनकुमार आचार्य, साईनाथ पुन्ने, दिगंबर रिद्दीवाडे, डॉ.उदयप्रसाद, ओमप्रकाशजी चांडक, युवराज शिंदे आदींची उपस्थिती होती.

सौ.शोभादेवी यांचे निलंगा हे माहेर, तर औराद (ता.उमरगा) हे सासर× आर्य कार्यकर्ते नामदेवराव पाखरसांगवे यांच्या चार संततीपैकी शोभादेवी या सर्वात लहान× पंचवीस वर्षापूर्वी त्यांचा आंतरजातीय विवाह झाला होता. कांही वर्षे हे दाम्पत्य हिसार व चाकूर येथे राहत होते. नंतर निलंगा येथे आणि गेल्या दोन-तीन वर्षांपासून पुणे येथे वास्तव्यास होते. सौ.शोभादेवी यांच्या अकाली निधनाने शास्त्री व पाखरसांगवे कुटुंबावर दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे.

# श्रीमती निवेदिता चौहान यांचे देहावसान

आर्य समाज चळवळीतील ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्या श्रीमती निवेदितादेवी नरेंद्रसिंह चौहान यांचे औरंगाबाद येथील राहत्या घरी वयाच्या ८८व्या वर्षी दि.२८ ऑगस्ट २०१७ रोजी पहाटे ५.३०वा. वृद्धापकाळाने दु:खद निधन झाले. सभेचे आंतरजातीय विवाह विभागप्रमुख ॲड.श्री जोगेंद्रसिंहजी चौहान यांच्या त्या मातु:श्री होत्या. त्यांच्या मागे एक मुलगा व तीन मुली, सुन, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे.

श्रीमती निवेदिता या मराठवाड्यातील प्रख्यात सिद्धांतनिष्ठ आर्य व्यक्तिमत्त्व म्हणून ओळखले जाणारे लातूरचे पं.उत्तममुनिजी (डी.आर.दास) यांच्या ज्येष्ठ कन्या तर प्रसिद्ध स्वातंत्र्यसैनिक श्री स्वामी सन्तोषानन्दजी सरस्वती(संग्रामसिहजी चौहान) यांच्या स्नुषा होत्या. ७० वर्षांपूर्वी त्यांचा तत्कालीन जातीयतेने जखडलेल्या प्रतिकूल काळात आंतरजातीय विवाह झाला होता. अगदी लहानपणापासून पितृकुलात तर विवाहानंतर पतिकुळात आर्यसमाजाच्या विचारांचा प्रभाव असल्याने श्रीमती चौहान यांच्यावर वैदिक तत्त्वज्ञानाचे संस्कार दृढ होत गेले. घरी सतत वैदिक विद्वान व आर्य कायकर्त्यांची वरदळ असल्याने त्यांचे आदरातिथ्य व सेवाकार्य त्यांनी मोठ्या श्रद्धेने केले. त्याचबरोबर कुटुंबियांवर आर्य विचारांचे सुसंस्कार रुजविण्याच्या कामी त्या अग्रणी होत्या. शांत, मृदू, मनमिळावू व सर्वांशी स्नेहाचे नाते जोडणाऱ्या श्रीमती चौहान अलीकडील १० वर्षांपासून वृद्धापकालीन रुग्णावस्थेमुळे त्या अंथरुणावरच होत्या. दिवंगत श्रीमती चौहान यांच्या पार्थिवावर संध्याकाळी ५ वाजता औरंगाबादेतील कैलाशनगर स्मशानभूमीत पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सर्वश्री दयाराम बसैये, संतोष आर्य, लक्ष्मण माने यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला. यावेळी शहरातील प्रतिष्ठित मंडळींची उपस्थिती होती.

**भारतीय संस्कृतीतील पावन विजयपर्व**

**दसरा (विजयादशमी)**

**उत्सवाच्या सर्वांना हार्दिक शुभेच्छा ×**

सर्व आर्यजनांनी असत्यावर सत्याचा विजय मिळवित वैदिक सिद्धांतांचा झेंडा साऱ्या जगात फडकवावा. सर्वजण विजयपथावर आरुढ व्हावेत, ही अभिलाषा...×

# हनमानलू पुल्लागोर यांना पत्नीशोक

शहापुर(ता.देगलूर जि.नांदेड) येथील आर्य समाजाचे वरिष्ठ सक्रिय कार्यकर्ते व कोषाध्यक्ष श्री हनमानलू पुल्लागोर यांच्या धर्मपत्नी सौ.लक्ष्मीबाई पुल्लागोर यांचे दि.१२ सप्टेंबर रोजी स.११ वा. हैदराबाद येथील एका खाजगी रुग्णालयात उपचारादरम्यान निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ५५वर्षांच्या होत्या. मेंदूज्वराच्या तीव्र आजारामुळे, अवघ्या चार-पाच दिवसाच्या आत त्यांचा आकस्मिक मृत्यू झाल्याने सर्वत्र हळहळ व्यक्त होत आहे. त्यांच्या पश्चात् २ मुले, एक मुलगी व नातवंडे असा परिवार आहे. सौ.लक्ष्मीबाई अत्यंत मनमिळाऊ, प्रेमळ, सेवाभावी व श्रद्धाळू होत्या. आर्य समाजाच्या कार्यात त्यांनी आपले पती श्री हनमानलू यांना मोलाची साथ दिली. कार्यक्रमानिमित्त घरी येणाऱ्या विद्वानांचे त्यांनी मनोभावे आदरातिथ्य केले.

अशा एका सुगृहिणीच्या अकाली निधनाने पुल्लागोर कुटुंबियांवर दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे. त्यांच्या पार्थिवावर धर्माबादचे पुरोहित पं.अनिल माकणे यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पध्दतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी आर्य समाजाचे प्रधान श्री गंगारेड्डी भूपतवार यांचे इतर पदाधिकारी व प्रतिष्ठित नागरिक मोठ्या प्रमाणावर उपस्थित होते.

**वरील दिवंगत आत्म्यांना शांती व सद्गती लाभो अशी प्रार्थना × महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, राज्यातील सर्व आर्य समाजाच्या वतीने दिवंगतांना भावपूर्ण श्रद्धांजली ×**

वार्ताविशेष

# सोलापूरात श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्साहात

सोलापूर येथील आर्य समाजाच्या वतीने योगेश्वर श्रीकृष्णांची जयंती (जन्माष्टमी) उत्साहपूर्ण वातावरणात साजरी करण्यात आली. यावेळी घेण्यात आलेल्या ÷महापुरुष प्रशंसन' यज्ञाचे ब्रह्मापद पं.राजवीरजी शास्त्री यांनी भूषविले. सहारनपुर येथून आलेले वैदिक विद्वान पं.शिवकुमारजी शास्त्री यांनी उपस्थितांना **÷योगेश्वर कृष्णांचे आदर्श व विशुद्ध जीवनचरित्र'** या विषयावर मार्गदर्शन केले. तर फरिदाबाद चे भजनीक पं.प्रदीप आर्य यांनी प्रेरक भजने सादर करून उपस्थितांचे प्रबोधन केले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी आर्य समाज पदाधिकाऱ्यांनी परिश्रम घेतले.

# लातूरात चौथ्या आर्य समाजाचे पुनरुज्जीवन

लातूर हे हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम काळापासूनच आर्य समाजाचे केंद्र म्हणून ओळखले जाते. शहरातील गांधी चौक परिसरातील आर्य समाजाने ८० वर्षे ओलांडली असून रामनगर भागातील आर्य समाज गेल्या २५ वर्षांपासून प्रगतीपथावर आहे. तर स्वातंत्र्य सैनिक नगरातील आर्य समाजाची पाळेमुळे सुदृढ होत आहेत. या तीन आर्य समाजांसोबत अंबाजोगाई/साई रोडच्या भक्तिनगर परिसरातील चौथा आर्य समाज दिवंगत डॉ.कुशलदेवजी शास्त्री यांच्या प्रेरणेने उद्‌घाटित झाला होता, पण मध्येच कार्यात खंड पडल्याने गतिशीलता अवरुद्ध झाली होती. अशातच यावर्षीच्या श्रावणी कार्यक्रमात आर्य समाज, रामनगरच्या पदाधिकाऱ्यांनी प्रोत्साहन दिले व पं.ब्रिजेशजजी शास्त्री यांच्या उपस्थितीत श्रावणी वेदप्रचार ही झाला. या भागातील विविध नगरातील आर्य कार्यकर्त्यांची बैठक दि.२३ जुलै रोजी श्री भालकीकरांच्या घरी पार पडली व सर्वानुमते या आर्य समाजाचे पुढीलप्रमाणे पदाधिकारी निवडण्यात आले.

प्रधान–ॲड.पांडुरंगराव खरे,

मंत्री–अशोक पवार,

कोषाध्यक्ष–सदाशिवराव भालकीकर,

पुस्तकाध्यक्ष–सौ.सुदक्षिणा बसंतपुरे,

क्रीडाध्यक्ष–विवेकानंद भालकीकर,

सदस्य–सौ.रत्नमाला आचार्य, सौ.ज्योती हालिंगे, रमाकांत गर्जे, सुभाष सूर्यवंशी इत्यादी पदाधिकारी निवडण्यात आले.

बैठकीत उपस्थित असलेले सर्वश्री माणिकराव भोसले, राजेंद्र दिवे, ज्ञानकुमार आर्य, वैजनाथराव हालिंगे आदी कार्यकर्त्यांनी नव्या कार्यकार्यकारिणीस वेद प्रचार कार्यवाढीकरिता शुभेच्छा दिल्या.

# हु. धर्मप्रकाश यांचा बलिदान दिवस साजरा

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील लढवय्ये आर्य हुतात्मे धर्मप्रकाश यांचा ७९वा बलिदान दिवस बसवकल्याण (कर्नाटक) येथे दि.२४ जून रोजी विविध कार्यक्रमांनी साजरा करण्यात आला. या कार्यक्रमास प्रमुख वक्ते म्हणून धुळे येथील वैदिक विद्वान प्रा.अखिलेश शर्मा हे, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून सर्वश्री पं.सुधाकरजी शास्त्री, खा.भगवंतराव खुबा, आ.मल्लिकाजुर्न खुबा व इतर मान्यवर उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे अध्यक्षस्थान कर्नाटक सभेचे प्रधान श्री सुभाष आष्टीकर यांनी भूषविले. दरम्यान सकाळी यज्ञ, प्रभातफेरी, श्रद्धांजली सभा आदी कार्यक्रम पार पडले.कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी प्रयत्न केले.

आर्य समाज हिंगोली में आयोजित श्रावणी समारोहपर युवा विद्वान पं.जयेंद्रजी शास्त्री का सम्मान कर रहे वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाशजी भारुका।

औराद शहाजानी (ता.निलंगा) की आर्य समाज में आयोजित श्रावणी समारोह में मार्गदर्शन करते हुए पं.धर्ममुनिजी क्रांतिकारी। साथ में हैं भजनोपदेशक पं.संदीपजी वैदिक।

आर्य समाज परली के श्रावणी पर्व उपलक्ष्य में आयोजित वेदपारायण यज्ञ में सपत्नीक सम्मिलित सर्वश्री जुगलकिशोरजी लोहिया, उग्रसेनजी राठौर एवं अमित राठौर।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री. ____________________

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

जीवेत् शरदः शतम् !

।। ओ३म् ।।

आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड
के दिवंगत वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, भजनोपदेशक
तथा कट्टर वेदानुगामी व्यक्तित्व
**स्व.श्री.सदाशिवरावजी पाटलोबा गुट्टे**
के द्वितीय स्मृतिदिवस (७ जून २०१७) के उपलक्ष्य में
उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे व परिवार**